ग्रामोद्योग माला—१

मेरा गाँव

[आत्मकथा के रूप में]

लेखक—
पथ्य, बीमारों का आहार, अमीरों की बीमारियाँ और आयुर्वेद में वृद्धि बढ़ाने का उपाय आदि २ के रचयिता
राय साहब
व्यास तनसुखजी वैद्य

सम्पादक—
श्री० सुन्दरलाल गर्ग

मूल्य—आठ आना

प्रकाशक—
संस्थापक,
साहित्य निकेतन,
अजमेर

प्रस्तावना

राय साहब चन्दुमलजी वैद ने अपनी पुस्तक 'मेरा गाँव' की प्रस्तावना लिखने के लिये कहा है और मुझे ऐसा करने में बहुत प्रसन्नता है। पुस्तक का विषय, सरल एवम् रोचक भाषा में, औसत हिन्दुस्तानी देहातों की स्वास्थ्य-रक्षा और सफ़ाई से सम्बन्ध रखता है। ऐसे विषयों पर लिखी हुई अन्य पुस्तकों की भाँति 'मेरा-गाँव', केवल उपदेशात्मक न होकर, कहानी के रूप में होने से, अपने आकर्षण और उपयोगिता में अधिक सफल हुई है। आज के भारत की अत्यन्त आवश्यक समस्याओं में ग्राम-सुधार प्रमुख है और इस तरह के प्रयत्नों को प्रोत्साहन देने वाली किसी भी पुस्तक को पूर्ण सहयोग मिलना चाहिये। 'मेरा-गाँव' ऐसी ही पुस्तक है और मैं उम्मीद करता हूँ कि इसका खूब ज्यादा प्रचार होगा।

माउंट आबू
११ मई, ३७

—जी० डी० ओगलवी
चीफ कमिश्नर, अजमेर-मेरवाड़ा.

FOREWORD.

Rai Sahib Tansukh Vaidya has asked me to write a foreword for his book "MERA GANVA" and I have much pleasure in doing so. The book deals in a simple and interesting manner with the improvement of sanitation and development of hygiene in the average Indian village. Unlike most books which are written on such subjects "Mera Ganva" is not treatise but imparts instruction in the form of a story and its attractiveness and usefulness are likely to be greatly enhanced thereby. One of the most urgent problems in India today is the improvement of village conditions and any book which tends to encourage that improvement deserves the fullest support; "Mera Ganva" is such a book and I hope it will be widely read.

Mount Abu,
the 11th May,
1937.

(Sd.) G. D. Ogilvie,
CHIEF COMMISSIONER,
AJMER-MERWARA.

मेरा निवेदन—

यह रोज का अनुभव है कि कोई भी बात चाहे वह कितनी ही उपयोगी, शिक्षाप्रद, और जीवन को उन्नत करने वाली क्यों न हो, पर, यदि वह मनोरंजक और मानसिक विचारों के अनुकूल न कही जावें तो लोगों के हृदय पर असर नहीं करतीं; और न

साधारण जनता ही उसके अनुसार चलने को उत्सुक होती है। उसमें भी तन्दुरुस्ती जैसे विषय को शास्त्रीय ढंग से विवेचन करने पर उसे अधिक लोग चाव से न तो पढ़ते व सुनते ही हैं और न साधारण जनता तक उसकी पहुँच ही हो पाती है। अस्तु, इन विचारों को सामने रख कर नगर और ग्रामवासियों के काम में आने वाली प्रति दिन की आवश्यक और उपयोगी बातें 'आत्म कथा' के रूप में इस पुस्तक में वर्णित की गई हैं और यथा शक्ति उसे रोचक बनाने का प्रयत्न भी किया गया है जिससे वर्णित विषय लोगों के हृदयों पर अंकित हो जावें और वे उपयोगी बातों को अपना कर उसके अनुसार व्यवहार करने लगें।

"मेरा गांव" के विवरण की घटनायें स्वाभाविक हैं, ऐतिहासिक हैं, और हैं—प्रत्यक्ष अनुभव की हुई। २० वर्ष पहिले मलेरिया का भयंकर प्रकोप हुआ था, उस समय ग्रामों की जो हालत हुई थी उसी का हृदयग्राही विवरण इसमें लिखा गया है। गांवों में रोग फैलने पर आज भी वह भयंकर दृश्य सामने आ जाता है। उस समय ग्राम्य-सेवा-समिति ने अच्छी सेवायें की थीं, उसका विवरण इसमें प्रसंग-वश कुछ बढ़ा कर कहा गया है, जो अपने रूप में सही है, अनुकरणीय है और नवयुवकों को सार्वजनिक सेवा से जानकार बना कर उत्साहित करने वाला है।

इसमें नवयुवक स्वयं-सेवक बनकर, भविष्य में सेवा करने के भावों से प्रेरित होकर, संकटावस्था में आगे आने को साहसी हो सकेंगे, उनमें बंधुत्व की भावना पैदा होगी, उनमें निठ्ठले बैठे रहने या गप्पें मारने के स्थान में बचे हुये समय को अच्छे कामों में बिताने की इच्छाओं का उदय होगा और वे पुकार आने के पहिले ही संगठित रूप से लोगों के कष्टों को घटाने की कोशिश करेंगे।

मेरे गाँव की यह कथा प्रकाशित होने के पहिले मलेरिया का भयङ्कर प्रकोप फिर सं॰ १९९३ में हो गया है। यह प्रकोप प्रोपोगेन्डा की कमी से व मलेरिया सम्बन्धी सफाई में गाँव वालों की ढिलाई से हुआ है। अस्तु, इस आक्रमण का विवरण भी इस कथा में इसलिये समावेश कर दिया गया है, जिससे लोगों को ध्यान रहे कि सफाई का प्रोपोगेन्डा लगातार चालू रखा जाना कितना जरूरी होता है।

गाँवों की ओर, प्रान्तों के सभी श्रेणी के लोगों का ध्यान एक साथ केन्द्रित करने के लिये एक सेवक होने के नाते यह सच्ची ऐतिहासिक कहानी उपस्थित की है। 'मेरा गाँव' वाले ही नहीं किन्तु सभी गाँव वाले इसे पढ़ सुन कर, अपने २ गाँवों की स्थिति सुधारने में प्रयत्नशील हो सके तो मैं अपने इस प्रयत्न को सफल समझूंगा।

इस पुस्तक में कहीं २ कुछ बातों की पुनरावृत्ति हो गई है पर, चूंकि यह सर्व साधारण के लाभ के लिए लिखी गई है; अतः हर एक बात को खुलासा ढङ्ग से समझाने के लिए ऐसा होना आवश्यक भी था।

आशा है विज्ञ-पाठक इस त्रुटि को अधिक महत्व न देंगे।

वसन्त पञ्चमी '९४
जन्म-स्थान
पाली-मारवाड़

जन्म-भूमि का एक सेवक
तनसुख वैद्य

हमारी बात !

आजकल लोगों का ध्यान ग्रामों की ओर आकर्षित हुआ है। चारों ओर ग्राम-सुधार व ग्राम-उन्नति (Village uplift) की चर्चा जोरों पर है। सरकार व राष्ट्र दोनों ही इस समय ग्रामों के उत्थान के लिए प्रयत्नशील हैं। सभी चाहते हैं कि ग्रामीणों की पिछड़ी हुई, स्वास्थ्य और शिक्षा की, अवस्था सुधरे और उनकी गरीबी भी थोड़े परिश्रम और कम खर्च में जल्दी से जल्दी दूर की जा सके। इसके लिये अनेक प्रकार से प्रयत्न होने लगे हैं, पर कार्य विस्तार और गांवों की हालत को देखते हुए अभी इस ओर जितना अधिक ध्यान दिया जावे उतना ही श्रेयकर है। अभी गांवों की कौन कहे, शहर वाले भी अनेक विषयों में अंधकार में हैं और उनके उत्थान के लिये भी उद्योग करने की जरूरत है। अस्तु, इन बातों को ध्यान में रखते हुए यह 'आत्म कथा' लिखी गई है, जो आशा है कि ग्राम वालों के लिये एवं उसी प्रकार शहर वालों के लिये भी बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

हमारे प्रान्त में प्रायः मलेरिया का प्रकोप हो जाया करता है, उस समय अनेक लोग कष्ट पाते हैं। अतः उसका अनुभव प्रत्यक्ष कराने के लिये एक अस्वास्थ्यकर स्थान — जहाँ मलेरिया की उत्पत्ति के सभी साधन कुदरती तौर पर मौजूद हैं और जहां मलेरिया पिछले कई वर्षों से होता भी आता है—चुन लिया गया है। वहां की अवस्था द्वारा मलेरिया की उत्पत्ति के कारण वतलाये गये हैं, साथ ही उसके रोकने के उपाय और बिना सरकारी मदद के जनता स्वयं इलाज करके किस प्रकार लाभ उठा सकती है उसका विशद विवरण इसमें वर्णित किया गया है और जिन लोगों ने अपना बहुमूल्य समय और द्रव्य खर्च करके ऐसी पवित्र सेवा में भाग लिया है, उनको समाज में ऊंचा बतलाने के लिये एक जलसे में श्री दरबार साहब द्वारा उनका उत्साह व सम्मान बढ़ाया गया है, जिससे दूसरे लोग भी उत्सुक होकर समाज-सेवा करने में आगे बढ़कर भाग लें। जलसे में सिविल सर्जन द्वारा इस रोग के सम्बंध में कुछ बातें ऐसे ढंग से व्याख्यान द्वारा कही गई हैं जो पढ़ने व सुनने वालों को अखरती नहीं हैं और वे उनके हृदयों पर सदा के लिये अंकित-सी हो जाती हैं।

इसके साथ ही जीवन की प्रतिदिन की घटनाओं को लेकर ग्राम्य जीवन, शिक्षा, व्यायाम, स्वास्थ्य, सफाई, पोषणता, पुराने रिवाज़, समाज सेवा, गांवों की अवस्था, मलेरिया ज्वर, रेड-क्रास सोसाइटी, म्यूनिसिपल कमेटी और सामाजिक संस्थाओं आदि पर आवश्यक हृदयग्राही विवेचन किया गया है जिसके पढ़ने व सुनने से जीवन उन्नत, स्वस्थ और दूसरों के दुःखों में सहायक होने वाला बन जाता है।

इससे विद्यार्थियों में वालण्टर (स्काउटस) बनने की अभिरुचि भी पैदा होगी। स्काउटिंग (वालण्टर) का ज्ञान प्राप्त करना जीवन के लिये अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक है। इसकी शिक्षा से नवयुवक आने वाली कठिनाइयों और आपदाओं को धैर्य से सहकर उनका प्रतिकार व्यवस्था के साथ संघ शक्ति से कर सकते हैं और उनमें सब प्रकार के कष्टों को सेहने का आत्मबल पैदा हो जाता है। वे संकट के समय घबड़ाते नहीं हैं। इन गुणों का जीवन को उन्नत बनाने के लिये युवकों में होना ज़रूरी है। अतः शिक्षा के साथ २ वालण्टर विद्या का ज्ञान प्राप्त करना भी बहुत आवश्यक है। पर, खेद है कि साधारण जनता अभी तक इसके लाभों से परिचित नहीं हुई है और न बहुतों को यह मालूम है कि इसके द्वारा समाज और देश की सेवा भी की जा सकती है। यही कारण है कि विद्यार्थी अवस्था में वालण्टर का ज्ञान प्राप्त करने के लिये माता पिताओं तक से प्रोत्साहन नहीं मिलता है। अस्तु, इस उपयोगी विषय की ओर भी ध्यान आकर्षित कराने के लिये प्रत्यक्ष उदाहरणों से वालण्टरों द्वारा की हुई लाभदायक सेवायें विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों को बतला कर वालण्टर बनने के लिए उत्साहित करना है।

'मेरा गांव' में वर्षा काल से ही बीमारी शुरू हो जाती है और महीनों रहती है। गरीब और निस्सहाय पीड़ितों की पुकार आये दिन यहां उठती है, पर, वह वहीं (गांव में) रह कर (गूंज कर) विलीन हो जाती है और इसी बीच में अनेक होनहार युवक बीमारी के कारण अकाल ही में काल के वशीभूत होकर, अपनी जन्मभूमि की गोद को सूनी करके, सेवा करने

से वंचित हो जाते हैं। गांव वालों के लिए इससे अधिक और दुःख की बात नहीं हो सकती। बेचारी विधवायें अपने जीवन को भार समझती हुई दुःख के दिनों को जैसे तैसे निकालती हैं, पर, उनका रुदन कभी बंद नहीं होता। यह सब वर्षों से होता आ रहा है फिर भी जितना चाहिये उतना ध्यान अभी भी इस ओर आकर्षित नहीं हो पाया है। क्या वास्तव में यह खेद की बात नहीं है?

पुस्तक अपने उद्‌देश्य में कहाँ तक सफल रही है, इस सम्बन्ध में मौन रह कर, यह हम विद्वान समालोचकों से ही जानना चाहेंगे। यहां हम केवल राय साहब वैद्य तनसुखजी व्यास को धन्यवाद देदें, जिन्होंने कृपा पूर्वक हमारे अनुरोध पर, यह पुस्तक हमें प्रकाशनार्थ दी है। व्यासजी हमारे इतने निकट है कि उनके सम्बन्ध में कुछ कहने से हम यहां चुप रहना ही अधिक पसन्द करेंगे।

पुस्तक तैयार होने से पहले ही, इस पर रा० ब० महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकरजी हीराचंद ओझा, प्रो० देवकीनन्दनजी शर्मा, पं० विश्वेश्वरनाथजी रेऊ, प्रो० त्रिपाठीजी और श्री मोहम्मद अबदुल जब्बार ग़ाज़ी (हेड मास्टर मोहम्मदअली मेमोरियल हाई स्कूल) की शुभ सम्मतियां हमें प्राप्त हुई हैं, जिसमें उन्होंने पुस्तक की हृदय से प्रशंसा की है।

आशा है ग्रामोद्धार में रुचि रखने वाले सभी व्यक्ति और हमारे ग्रामीण भाई इस से कुछ लाभ उठा सकेंगे।

साहित्य निकेतन
५।२।३८

—प्रकाशक

भारत सरकार के स्वास्थ्य-विभाग के कमिश्नर
कर्नल ए० जे० एच० रसेल साहब की
शुभ कामना—

प्रिय महाराय,

आपका ता० ३० का पत्र और 'मेरा गाँव' शीर्षक पुस्तक की हस्तलिखित प्रति प्राप्त हुई। मैं आपकी इस बात से सहमत हूं कि इस तरह की सरल कहानियाँ; जैसी कि आपने लिखी हैं; ग्रामीण दशा की उन्नति के लिये, ज्ञान वृद्धि में सहायक होंगी। मुझे आशा है कि आपकी पुस्तक सफलता प्राप्त करेगी।.....................

आपका—
ए० जे० एच० रसैल

No. 389/37/5673/I

From

Colonel A. J. H. Russell,
C.B.E., K.H.S., I.M.S.,
Public Health Commissioner with
the Government of India.

To

Rai Sahib Bias Tansukh Vaidya,
Honorary Magistrate,
Ayurvedic Oushdhalaya,
BEAWAR

Dear Sir,

I am in receipt of your letter of the 30th May, enclosing the Manuscript of your booklet entitled "My Village." I agree with you that simple stories such as that which you have written will be of value in spreading information in regard to the improvement of village conditions. I hope your booklet will be a success. The manuscript is returned herewith.

Yours Sincerely,
(Sd.) **A. J. H. Russell.**

मेरा गाँव

प्रारम्भिक शिक्षा—

बचपन में मैंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही प्राप्त की थी। गांव छोटा ही था, इससे वहां उच्च शिक्षा का प्रबन्ध नहीं था और न उन दिनों में अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था ही थी। इससे मेरी शिक्षा में बड़ी रुकावटें हुईं। घर में 'लाड़ला' होने से मेरे माता पिता मुझे कहीं बाहर पढ़ने के लिये भेजने को राजी नहीं होते थे, इससे बचपन का बहुत सा समय मुझे गांव में ही बिताना पड़ा।

बचपन का व्यायाम व खेल कूद—

गांव में एक दो स्थानों पर छोटी-छोटी व्यायाम-शालायें (अखाड़े) थीं। कई लड़के सुबह ही सुबह घोसियों के यहां ताजा कच्चा दूध पीकर कसरत किया करते थे, पर, मैं चोट लग जाने के डर से अखाड़ों में नहीं भेजा गया और न गलियों में साथियों के साथ खेल कूद में भाग लेने की इच्छा ही पूरी कर सका। इससे न तो मेरा शरीर पुष्ट हुआ और न मैं शक्ति-शाली हो बना।

बचपन का मेरा स्वास्थ्य—

गांव में मेरी तन्दुरुस्ती अक्सर बिगड़ी रहती थी। बुखार तो जब तब चढ़ आता था, इससे कमजोरी के सिवाय मेरे चेहरे पर तेजी नहीं आती थी, शरीर पीला-सा दिखलाई पड़ता था और पेट भारी और बढ़ा हुआ रहता था।

मेरे स्वास्थ्य सुधारने के प्रयत्न—

स्वास्थ्य सुधारने के लिये किसी विद्वान् चिकित्सक से सलाह लेने के स्थान में मुझे 'सरदी' से बचाये रखने की ओर ज्यादा ध्यान दिया जाता था। कपड़े गरम पहिनाये जाते थे, रात्रि में मुझे बन्द मकान में सोना पड़ता था और पुष्टाई के लिए जलेबी, रबड़ी, बादाम, अखरोट, पिस्ते, दाख, गुड़ अधिक सेवन की हिदायत मिलती थी। इतनी लग्न रखने पर भी मेरी तन्दुरुस्ती की शिकायत कम नहीं होती थी और मेरे माता पिता को मेरे स्वास्थ्य के लिए, सदा चिन्तित रहना पड़ता था। मुझे नजर न लगे इसका वहम भी उन्हें सताता था और उससे बचने के लिये हफ्ते में एक दो बार नमक मिर्च भी मेरे सिर पर घुमा कर चूल्हे में डाले जाते थे।

मेरे मामाजी शहर में रहते थे और वे बहुत चाहते थे कि मैं उनके पास रहूँ जिससे मेरी तन्दुरुस्ती में सुधार हो और मेरी शिक्षा भी आगे बढ़े। उन्होंने कई बार इसके लिये प्रयत्न भी

किया पर मेरे घर वाले मुझे कहीं बाहर गांव भेजने को राजी नहीं होते थे और मैं आज अनुभव करता हूँ कि मोह से मेरा यह कीमती समय बिना शिक्षा के वृथा ही गया।

गांव की आबहवा—

गांव की आबहवा अच्छी नहीं थी। लोग इस स्थान को स्वास्थ्य जनक नहीं समझते थे। यहां हर साल आसोज के महीने में बीमारी का दौर-दौरा हो जाया करता था, उस समय लोग घर २ में बीमार होकर तकलीफ पाते थे, हमारे घर में उन दिनों खाट बिछी रहती थी। कभी २ बीमारी इतने घोर से फैलती कि घर में प्रायः सभी लोग एक साथ बीमार पड़ जाते और उनकी सेवा सुश्रुषा करने वाला कोई बच नहीं रहता, यहां तक कि पानी पिलाने वाला भी घर में मुश्किल से आरोग्य बचता था।

गांव वालों की दृष्टि में बीमारी का कारण—

इन्हीं दिनों काकड़ियें, फाचरे, बेर, हरी मिरचें आदि बहुतायत से मिलने लगती थीं और स्वादिष्ट तथा सस्ती होने से इन चीजों का सेवन भी बहुत होता था, पर, कुछ लोगों का खयाल था कि इन चीजों के अधिक सेवन से ही यह बीमारी उत्पन्न होती है, अतः जो लोग अपनी जीभ को वश में रख सकते थे वे खास तौर पर इन से परहेज रखते थे। पर, खेद है कि इस पर भी वे नीरोग नहीं बचते थे और उन्हें भी एकाध बार तो बीमारी

बचपन का मेरा स्वास्थ्य—

गांव में मेरी तन्दुरुस्ती अक्सर बिगड़ी रहती थी। बुखार तो जब तब चढ़ आता था, इससे कमजोरी के सिवाय मेरे चेहरे पर तेजी नहीं आती थी, शरीर पीला-सा दिखलाई पड़ता था और पेट भारी और बढ़ा हुआ रहता था।

मेरे स्वास्थ्य सुधारने के प्रयत्न—

स्वास्थ्य सुधारने के लिये किसी विद्वान् चिकित्सक से सलाह लेने के स्थान में मुझे 'सरदी' से बचाये रखने की ओर ज्यादा ध्यान दिया जाता था। कपड़े गरम पहिनाये जाते थे, रात्रि में मुझे बन्द मकान में सोना पड़ता था और पुष्टाई के लिए जलेबी, रबड़ी, बादाम, अखरोट, पिस्ते, दाख, गुड़ अधिक सेवन की हिदायत मिलती थी। इतनी लग्न रखने पर भी मेरी तन्दुरुस्ती की शिकायत कम नहीं होती थी और मेरे माता पिता को मेरे स्वास्थ्य के लिए, सदा चिन्तित रहना पड़ता था। मुझे नजर न लगे इसका वहम भी उन्हें सताता था और उससे बचने के लिये हफ़्ते में एक दो वार नमक मिर्च भी मेरे सिर पर घुमा कर चूल्हे में डाले जाते थे।

मेरे मामाजी शहर में रहते थे और वे बहुत चाहते थे कि मैं उनके पास रहूँ जिससे मेरी तन्दुरुस्ती में सुधार हो और मेरी शिक्षा भी आगे बढ़े। उन्होंने कई वार इसके लिये प्रयत्न भी

किया पर मेरे घर वाले मुझे कहीं बाहर गांव भेजने को राजी नहीं होते थे और मैं आज अनुभव करता हूँ कि गोद से मेरा यह कीमती समय बिना शिक्षा के वृथा ही गया।

गांव की आबहवा—

गांव की आबहवा अच्छी नहीं थी। लोग इस स्थान को स्वास्थ्य जनक नहीं समझते थे। यहां हर साल आसोज के महीने में बीमारी का दौर-दौरा हो जाया करता था, उस समय लोग घर २ में बीमार होकर तकलीफ पाते थे, हमारे घर में उन दिनों खाट बिछी रहती थी। कभी २ बीमारी इतने जोर से फैलती कि घर में प्रायः सभी लोग एक साथ बीमार पड़ जाते और उनकी सेवा सुश्रुषा करने वाला कोई बच नहीं रहता, यहां तक कि पानी पिलाने वाला भी घर में मुश्किल से आरोग्य बचता था।

गांव वालों की दृष्टि में बीमारी का कारण—

इन्हीं दिनों काकड़ियें, काचरे, बेर, हरी मिर्चें आदि बहुतायत से मिलने लगती थीं और स्वादिष्ट तथा सस्ती होने से इन चीजों का सेवन भी बहुत होता था, पर, कुछ लोगों का खयाल था कि इन चीजों के अधिक सेवन से ही यह बीमारी उत्पन्न होती है, अतः जो लोग अपनी जीभ को वश में रख सकते थे वे खास तौर पर इन से परहेज रखते थे। पर, खेद है कि इस पर भी वे नीरोग नहीं बचते थे और उन्हें भी एकाध बार तो बीमारी

होना पड़ता था। कुछ समय बाद सर्दी घट कर
गर्मी देने लगती और ओढ़े हुये सब कपड़े इसने बुरे लगते कि
फेंक देना पड़ता और रोगी गर्मी के मारे ... ने
कुछ घण्टों तक शरीर बहुत गर्म रह कर फिर ठण्डा
और पसीना आकर स्वास्थ्य धीरे २ अच्छा हो
की हालत में कै, प्यास, सिर-पीड़ा, बेचैनी,
पीड़ा आदि कई एक उपद्रव भी साथ में होने से
बड़ी तकलीफ होती थी। पसीना आ जाने के
तक तबीयत ठीक रहती, और फिर दूसरे दि
कुछ देर अथवा जल्दी में पिछले दिन की तरह
और शरीर पर जाड़ा चढ़ता कै आदि होने
... दिन तक ऐसी अवस्था बनी रहती और
... कष्ट उठाना पड़ता था।

...पाई उपाय—

बीमारी से बचने के लिए गांव वाले
... थे। आराम होने के लिये कोई 'भाऊ'
... था, कोई आक के पत्तों में इन्हें गुथा
... के पत्तों के थोड़े से रस में गुड़ मिला
... कुटक चिरायते को डांट के कटोरे भर कर पीता,
... कोई गले में डोरा, तावीज या मन्त्र बांधता,
... दरवाजे के बाहर पीपल के पत्ते पर कुछ लिखवा कर

का स्वाद चखना ही पड़ता था। लोगों ने यह विश्वास कर लिया था कि बीमारी के दौरे में एक-एक बार तो सब को ही भुगतना पड़ता है।

बीमारी की साधारण अवधि—

बीमारी प्रायः दोतीन महीनों तक तो ज्यादा रहती थी और फिर धीरे धीरे घटती जाती थी, पर जो लोग बार बार बीमार होकर कमजोर हो जाते थे, अथवा जिनकी तिल्ली बढ़ जाती या जिगर बिगड़ जाता, अथवा जिनके खून की कमी हो जाती उन्हें सर्दी की मौसिम भर तक बीमारी का सामना करना पड़ता था और कितने ही तो अन्य दूसरी बीमारियों में फंस कर मरणासन्न भी हो जाते।

मामूली अवस्था में बीमारी दीवाली के बाद घट जाती थी। लोगों का कहना भी था कि दीपावली के 'दीये' (रोशनी) देखने के बाद बीमारी चली जाती है।

(२)

जादू का सा असर—

बीमारी क्या थी, एक प्रकार का जादू-सा था। स्वस्थ पुरुष बैठा बैठा सरदी के कारण काँपने लगता था। सरदी बढ़ते २ इतनी अधिक लगने लगती कि गरम कपड़े ओढ़ लेने की जरूरत हो जाती। कभी २ तो घर के सब गूदड़े तक ऊपर लाद लेने को लाचार

होना पड़ता था। कुछ समय बाद सर्दी घट कर 'तपत' मालूम देने लगती और ओढ़े हुये सब कपड़े इतने बुरे लगते कि इन्हें फेंक देना पड़ता और रोगी गर्मी के मारे तड़फने लग जाता। कुछ घण्टों तक शरीर बहुत गर्म रह कर फिर ठण्डा होने लगता और पसीना आकर स्वास्थ्य धीरे २ अच्छा हो जाता। बीमारी की हालत में कै, प्यास, सिर-पीड़ा, बैचेनी, कब्जी, दाह, अंग-पीड़ा आदि कई एक उपद्रव भी साथ में होते थे जिनसे बीमार को बड़ी तकलीफ होती थी। पसीना आ जाने के बाद कुछ घण्टों तक तबीयत ठीक रहती, और फिर दूसरे दिन उसी समय या कुछ देर अथवा जल्दी में पिछले दिन की तरह सर्दी लगने लगती और शरीर तप जाता तथा कै आदि होने लगतीं। इस तरह कई दिन तक ऐसी अवस्था बनी रहती और लोगों को नाना प्रकार से कष्ट उठाना पड़ता था।

गांवाई उपाय—

बीमारी से बचने के लिए गांव वाले कोई खास प्रतिकार नहीं करते थे। आराम होने के लिये कोई 'आक' को निमन्त्रित कर आता था, कोई आक के पत्तों में शूलें चुभा आता था, कोई धतूरे के पत्तों के थोड़े से रस में गुड़ मिला कर सेवन करता, कोई कुटक चिरायते को बांट के कटोरे भर कर पीता, कोई कहानी सुनता, कोई गले में डोरा, तावीज या मन्त्र बांधता, कोई मकान के दरवाजे के बाहर पीपल के पत्ते पर कुछ लिखवा कर टांगता

और ऐसे ही और भी कई उपाय होते; परन्तु बीमारी मिटाने के लिए किसी अच्छे चिकित्सक से दवा लेने का प्रयत्न बहुत थोड़े घरों में होता था।

बम्बई से मँगवाई ताप की गोलियें एक सेठजी की दुकान पर मुफ्त में लोगों को बांटी जाती थीं पर किस रोगी को कितनी गोली कब और किस अवस्था में देनी चाहिये इसका अनुभव दुकान वालों को न होने से गोलियों से सबको लाभ नहीं पहुँचता था, उल्टा उनसे किसी २ की बेचैनी बढ़ जाती थी, जिससे आम लोगों की श्रद्धा उन पर कम थी। "गर्मी करती है" के डर से बहुत थोड़े लोग उनका सेवन करते थे। अतः उनसे विशेष लाभ नहीं पहुँचता था।

हरिजनों तथा किसानों की अवस्था—

हरिजनों तथा किसानों के मकान गांव के बाहर ऐसी गन्दी जगहों पर बने हुये थे, जहाँ अस्वच्छता का हर समय साम्राज्य रहता था, साथ ही रहन सहन की अव्यवस्था, दरिद्रता, स्वच्छता के नियमों की अज्ञानता आदि ऐसी कई बातें थीं जिनसे बीमारी सबसे पहिले इन्हीं लोगों में फैलती थी और ये ही लोग कष्ट भी ज्यादा पाते थे। दवाओं पर न तो इनको विश्वास था और न सहज में इन्हें प्राप्त ही हो सकती थी, न पथ्य रखने के इनके पास साधन ही थे। ये तो छाछ और राबड़ी को ही अकसीर दवा समझते थे और जैसे तैसे भुगत कर स्वयं उठ खड़े हो जाते थे।

इनका रक्षक तो भगवान ही था। बेचारे बीमारी की हालत में ही खेतों पर जाकर 'साख' की सम्हाल करते थे अथवा घर में अकेले पड़े रह कर 'राम राम' पुकारा करते थे। इन्हीं दिनों खेती पकती थी इससे घर वाले सभी खेतों पर चले जाते थे जिससे बीमार की सम्हाल करने वाला समय पर मुश्किल से ही कोई घर रह पाता था।

उनकी करुण कथा—

इनकी करुणाजनक अवस्था तो यहां तक देखी गई है कि उन्हें बीमारी में ही खेतों पर जाना पड़ता था और शक्ति रहते पेट के लिये विवश होकर खेतों में काम भी करना पड़ता था और जब 'धूते' (शक्ति) से ज्यादा हालत खराब हो जाती, तब वहीं कहीं पड़ रहना पड़ता था।

बीमारी का भोग—

दैवी आपत्तियों से बचाने व सहायता पहुँचाने के लिये ग्रामों में उस समय तक न तो स्काउटों (बालचरों) का और न "रेड-क्रास" नामक संस्था का ही प्रचार हुआ था, न सेवा समितियाँ या धर्मार्थ औषधालय ही वहां स्थापित हुये थे, जिनसे लोगों को ऐसी विकट अवस्था में—दवा आदि से सेवा सुश्रुषा करके साँत्वना पहुँचाई जा सके। लोगों को भाग्य पर रह कर अपना दुःख स्वयं भोगने के लिये लाचार होना पड़ता था। आश्विन, कार्तिक

मास में तो इस बीमारी से शरीर को ही कष्ट पहुँचता था, पर ठण्ड की मौसम में अवस्था विशेष भीषण हो जाती थी। कमज़ोर और बीमार व्यक्ति कुपथ्य आदि से; न्यूमोनिया आदि दूसरे रोगों में फंस कर; अकाल ही में काल के वश हो, घर वालों को निःसहाय और निराश्रय करके, उन्हें कष्ट भुगतने के लिये छोड़ जाते थे। जिससे गांव में शोक ही शोक छाया रहता था और निराश्रितों का दुःख भरा रोना सुन कर हृदय पसीजता था।

पूंजीपतियों की जिम्मेवारी—

गाँव की ऐसी भीषण अवस्था वर्षों से बनी होने पर भी अनेक समर्थ पूञ्जीपतियों ने सुधार के लिये न तो उत्साह से भाग लिया और न कभी कुछ आर्थिक सहायता ही प्रदान की। सार्वजनिक स्वास्थ्य सुधारने के प्रति उनका ध्यान भी आकर्षित नहीं हुआ और न उन्होंने इसमें अपनी जिम्मेवारी ही समझी।

यही बात थी कि गांव अस्वास्थकर समझा जाता था और जिले भर में सबसे अधिक मौतें यहीं होती थीं।

संगठन का अभाव—

गांव में यों तो बस्ती खूब थी, सभी जाति के मनुष्य वहाँ बसते थे, आबादी काफी थी, व्यापार भी अच्छा होता था और यहाँ वालों की बम्बई में दुकानें भी थीं। समय को देखते गाँव वालों में परस्पर सहानुभूति तथा बन्धुत्व भी था, पर, वर्तमान

परिस्थिति से अनजान होने तथा पुराने रीति रिवाजों पर अन्ध विश्वासी होने और जातीयता के कट्टरपन के कारण, साथ ही सार्वजनिक संगठन की कमी से; न तो वहाँ कोई सामाजिक सुधार ही हो सकता था और न गाँव के स्वास्थ की उन्नति के लिये ही कुछ किया जा सकता था।

(३)

गाँव के हालात—

राजधानी से ४० मील की दूरी पर यह गांव बहुत पुराना बसा हुआ था। पुराने जमाने में इसकी बड़ी कीर्ति फैली हुई थी, आज भी लोग उदाहरण के लिए उसे याद कर लेते हैं। वर्तमान में भी रियासत में कितने ही मुख्य गाँवों में से यह भी एक गिना जाता है। गांव में पुराने समय के कितने ही सुन्दर जलाशय हैं जिनसे प्राचीन काल की इस गांव की समृद्धि का पता लगता है, पर आज तो उनकी मरम्मत करना भी कठिन हो रहा है। गाँव के निकट उत्तर-पूर्व में एक सुन्दर और बड़ा तालाव था जो मरूभूमि में श्री पुष्करजी की भांति भव्य और लोगों के चित्त को आनन्दित करने वाला था। तालाब पर सुन्दर घाट पक्के बने हुये थे जहाँ पर सुविधा के साथ प्रत्येक व्यक्ति स्नान करता था, कपड़े धोता था, जानवर भी पानी पीते थे और निम्न श्रेणी के लोग पानी भी पीने को यहीं से ले जाते थे। तालाब

में पानी हमेशा बना रहता था। पानी की इतनी बहुतायत जिले भर में सबसे अधिक यहीं थी। गर्मी की मौसिम में नहाने धोने का ऐसा आराम यहां से ज्यादा कहीं और न था। इस तालाब के सिवाय गांव के इर्द गिर्द और भी कई छोटे २ तालाब तथा नाडियें थी जिनसे शहर के चारों तरफ पानी ही पानी नज़र आता था। गांव के दक्षिण में एक नदी ऐसी भी थी जो वर्षाकाल में बड़ी तेजी से बहती थी और उससे ही गांव के तालाब तथा अन्य जलाशय भर कर बहने लगते थे। वर्षाकाल में गांव एक प्रकार से टापू बन जाता था और जिधर जाते वहीं पानी ही पानी इकट्ठा हुआ मिलता था।

मरुभूमि में पानी का ऐसा ठाठ होना, यहाँ वालों के लिये एक सौभाग्य की बात समझी जानी चाहिये। पर, साथ ही यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि गांव वाले सार्वजनिक स्वास्थ्य के नियमों से अज्ञान होने से जल स्वच्छ रहे, इसका कुछ भी विचार कम रखते थे जिससे कई जलाशयों पर गन्दगी होती रहती थी।

नदी से पानी जिस जलाशय में पहिले आता था वहां गाँव के सभी छींपे रंगत के कपड़े धोते थे, स्त्रियाँ वहीं स्नान करतीं और अपने गन्दे कपड़े धोतीं, गन्दी गूदड़े, प्रसूति के बिछड़े और बीमारों के छूत वाले कपड़े आदि भी यहीं धोये जाते थे। नहाने वालों में अधिकतर संख्या निम्नश्रेणी के लोगों की ही हुआ करती थी। वहां से पानी बड़े तालाब में आता था। जहां सभी श्रेणी के लोग स्नान करते व कपड़े धोते थे तथा पास ही निकटते (वहीं)

जाते) भी थे। इसी तालाब से पानी नाडियों में तथा दूसरे जलाशयों में आता था, वहां भी कहीं सफाई नहीं रखी जाती थी। सूखा रहने पर लोग वहीं पाखाना चले जाते और पानी भर जाने पर वहीं पास ही शौच करते थे, जिससे चारों ओर का पानी हमेशा गन्दासा और बिगड़ा रहता था। वर्षाकाल में सब ओर पानी रहने से कई जलाशयों का पानी स्थिर रहता और कुछ भी उपयोग नहीं होता था, जिससे वहां मच्छरों की उत्पत्ति होती रहती। मच्छर तो प्रायः सभी जलाशयों पर अपना साम्राज्य रखते थे। और तालाब के उस तरफ की जगहों में जहाँ दलदल रहता था, और भी बहुतायत से मिलते थे।

गांव की सफाई—

गांव में सफाई को लेकर अब तक कभी कुछ प्रबन्ध नहीं हुआ था। लोग स्वच्छन्दता से चाहे जहां मैलापन कर देते थे, तालाब और कुओं के पास रोक टोक न होने से लोग वहीं पाखाना भी चले जाते। शहर का कूड़ा करकट गलियों में तथा गांव के बाहर इर्द गिर्द फैला रहता था जो वर्षा में सड़ कर दुर्गन्ध फैलाता और मच्छरों को पैदा करता था। सफाई के नियमों की जानकारी न होने से लोग अपने २ घरों के बाहर ही जहां वहां मूठन आदि फेंक देते थे जिससे मक्खियाँ बहुतायत से पैदा हो जाती थीं। सड़कें कहीं भी पक्की नहीं थी। आवश्यकता पर जो चाहे वहीं खड्डा खोद देता था और इससे राह चलने वालों को

में पानी हमेशा वना रहता था। पानी की इतनी वहुतायत जिले भर में सबसे अधिक यहीं थी। गर्मी की मौसिम में नहाने धोने का ऐसा आराम यहां से ज्यादा कहीं और न था। इस तालाव के सिवाय गांव के इर्द गिर्द और भी कई छोटे २ तालाव तथा नाडियें थी जिनसे शहर के चारों तरफ पानी ही पानी नज़र आता था। गांव के दक्षिण में एक नदी ऐसी भी थी जो वर्षाकाल में बड़ी तेजी से वहती थी और उससे ही गांव के तालाव तथा अन्य जलाशय भर कर वहने लगते थे। वर्षाकाल में गांव एक प्रकार से टापू वन जाता था और जिधर जाते वहीं पानी ही पानी इकट्ठा हुआ मिलता था।

मरूभूमि में पानी का ऐसा ठाठ होना, यहाँ वालों के लिये एक सौभाग्य की वात समझी जानी चाहिये। पर, साथ ही यह वात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि गांव वाले सार्वजनिक स्वास्थ्य के नियंमों से अजान होने से जल स्वच्छ रहे, इसका कुछ भी विचार कम रखते थे जिससे कई जलाशयों पर गन्दगी होती रहती थी। नदी से पानी जिस जलाशय में पहिले आता था वहां गाँव के सभी छींपे रंगत के कपड़े धोते थे, स्त्रियाँ वहीं स्नान करतीं और अपने गन्दे कपड़े धोतीं, राली गूदड़े, प्रसूति के चिथड़े और वीमारों के छूत वाले कपड़े आदि भी यहीं धोये जाते थे। नहाने वाल ों में अधिकतर संख्या निम्न श्रेणी के लोगों की ही हुआ करती थी। वहां से पानी वड़े तालाव में आता था। जहां सभी श्रेणी के लोग स्नान करते व कपड़े धोते थे तथा पास ही निवटते (टट्टी)

जाते) भी थे। इसी तालाब से पानी नाडियों में तथा दूसरे जलाशयों में आता था, वहां भी कहीं सफाई नहीं रखी जाती थी। सूखा रहने पर लोग वहीं पाखाना चले जाते और पानी भर जाने पर वहीं पास ही शौच करते थे, जिससे चारों ओर का पानी हमेशा गन्दासा और बिगड़ा रहता था। वर्षाकाल में सब ओर पानी रहने से कई जलाशयों का पानी स्थिर रहता और कुछ भी उपयोग नहीं होता था, जिससे वहां मच्छरों की उत्पत्ति होती रहती। मच्छर तो प्रायः सभी जलाशयों पर अपना साम्राज्य रखते थे। और तालाब के उस तरफ की जगहों में जहाँ दलदल रहता था, और भी बहुतायत से मिलते थे।

गांव की सफाई—

गांव में सफाई को लेकर अब तक कभी कुछ प्रबन्ध नहीं हुआ था। लोग स्वच्छन्दता से चाहे जहां मैलापन कर देते थे, तालाब और कुओं के पास रोक टोक न होने से लोग वहीं पाखाना भी चले जाते। शहर का कूड़ा करकट गलियों में तथा गांव के बाहर इर्द गिर्द फैला रहता था जो वर्षा में सड़ कर दुर्गन्ध फैलाता और मच्छरों को पैदा करता था। सफाई के नियमों की जानकारी न होने से लोग अपने २ घरों के बाहर ही जहां तहां मूठन आदि फेंक देते थे जिससे मक्खियाँ बहुतायत से पैदा हो जाती थीं। सड़कें कहीं भी पक्की नहीं थी। पर जो चाहे वहीं खड्डा खोद देता था

जो कष्ट पहुँचता था उसकी खोदने वालों को न तो पर्वाह होती थी और न कोई उपालम्भ ही किसी को दे सकता था। सभी इस विषय में, स्वतन्त्र थे। इससे घर के पास ही खड्डों में पानी भर कर पड़ा पड़ा सड़ता था और मच्छरों को पैदा करता था। गांव में वर्षा ऋतु में मच्छरों और मक्खियों की उत्पत्ति बहुत अधिक हो जाती थी पर उनके रोकने के लिये भी कोई सार्वजनिक उपाय न होता था।

मक्खियों से बचने के लिये तो खान पान की चीजें भी ढक कर नहीं रक्खी जाती थीं। स्त्रियाँ इसका महत्व ही कब समझती थी, इससे रसोई घर ही नहीं किन्तु घर में सभी जगह खान पान की चीजें बिखरी हुई खुली पड़ी रहती थीं और जहाँ तहां भूठन और गलीचपन हो जाता था इससे सब जगहों पर मक्खियाँ भिनभिनाती रहती और उनसे बचे रहना बड़ा कठिन काम हो जाता था। हलवाई लोग भी अपनी मिठाइयाँ खुली रख कर बाजार में बेचते थे जिससे वहाँ भी हर समय मक्खियाँ मंडराती रहती थीं। पर, खेद है कि इनसे होने वाली हानियों के प्रति लोग लापरवाह हो कर किसी भी प्रकार का उपाय नहीं सोचते थे वरन् ऐसी मिठाइयाँ बच्चों तक को खिला कर उन्हें बीमार बनाने में स्वयं अपने हाथों कारण बनते थे।

भाग्य पर निर्भर—

गाँव की यह हालत पुराने समय से चली आती थी। कभी किसी समझदार ने स्वास्थ्य की उपादेय बातें बतलाईं भी तो लोगों ने उन पर न तो विश्वास किया और न उनके अनुसार चल कर कुछ अनुभव ही प्राप्त करना चाहा, बल्कि उल्टा उपेक्षा की दृष्टि से देखा और सुना। लोग बीमारी आदि के दुखों को ईश्वरीय कोप समझते और उनकी रोक मनुष्य के हाथ में किसी अंश में है, इसे असम्भव-सा मानते थे।

(४)

गांव से शहर में—

आखिर बड़े प्रयत्न और समझाने बुझाने पर मेरे माता पिता ने मुझे अंग्रेजी पढ़ने के लिये मामाजी के साथ शहर में भेजना स्वीकार कर लिया और शीघ्र ही शुभ मुहूर्त में, मैं अपने जन्म गाँव से विदा होकर, शहर में जा रहा। शहर की सफाई, सेनीटेशन और तन्दुरुस्ती बढ़ाने वाले 'प्रोपेगेन्डा' को देख कर मैं अवाक्-सा हो गया और गाँवों की दुर्दशा पर शोक करने लगा। आम तौर पर गांव की आबहवा सहज में मिल जाती है इससे शहर की अपेक्षा वे स्वस्थ स्थान समझे जाते हैं पर, आज कल इससे उल्टा अनुभव हो रहा है और शहरों की

अपेक्षा गाँवों की अवहेलना रख कर केवल शहरों के जीवन को ही आनन्दमय बनाने के लिये रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है।

तन्दुरुस्ती में सुधार—

शहर में जाकर रहने के बाद थोड़े दिनों में ही मेरी तन्दुरुस्ती अच्छी हो गई, मेरे पेट में बढ़ी हुई तिल्ली भी मामूली अवस्था में आ गई तथा चेहरे का पीलापन भी दूर हो गया। मेरे माता पिता अक्सर मोहवश मिलने के लिये शहर में आ जाते थे और मेरी तन्दुरुस्ती देख कर प्रसन्न होते थे और संतोष प्रकट करते थे।

शिक्षा की वृद्धि—

शहर में जाकर मैं सजातीय स्कूल में भरती हो गया और पढ़ने में दत्तचित्त रहा। मैंने मास्टरों को सदा अपने कामों से प्रसन्न रखा, और सहपाठियों से मित्रता बढ़ाई। स्कूलों में शिक्षा के साथ २ बुरे मित्रों के कारण प्रायः नैतिक पतन और आदत खर्चीली हो जाती है, फैशन का भूत भी सवार होने लगता है और जो दृढ़ प्रतिज्ञ नहीं होते वे इनमें बुरी तरह फंस जाते हैं, पर सौभाग्यवश मेरी क्लास में ऐसे सहपाठी नहीं थे इससे मेरा बड़ा बचाव हुआ। धीरे २ मेरी पढ़ाई आगे बढ़ती गई, मैं प्रत्येक क्लास में अच्छे नम्बरों से पास होता

गया, इधर स्वास्थ्य सम्बन्धी उपयोगी बातें भी मेरी जानकारी में आने लगीं और मेरा दृढ़ विश्वास होता गया कि सफाई की कमी से ही मेरे गाँव में प्रति वर्ष ज्यादा बीमारी रहती है और यह सेनेटेशन में सुधार कर देने से दूर भी की जा सकती है। मैं अवकाश के समय जब कभी घरवालों को पत्र लिखता तो इसका जिक्र जरूर करता और यह प्रार्थना भी करता कि या तो स्वास्थ्य के नियमानुकूल वहाँ रहा जावे अथवा गाँव छोड़ कर शहर में चले आना ज्यादा हितकर है। जमींदारी का काम होने से घरवाले शहर में आने को राजी न होते थे और न आ ही सकते थे। शिक्षा की वृद्धि के साथ २ मैं स्काउटिंग में भी दिलचस्पी लेने लगा और उसमें मुझे अच्छी सफलता भी मिली।

छुट्टियों में गांव में—

स्कूल की गर्मी की छुट्टियों में मैं अपने गाँव में चला जाता और वहाँ सफाई रखने के लाभ बताता। पर खेद है कि लोग उसका महत्व नहीं समझते और न अपनी आदतों का सुधार कर व्यक्तिगत स्वच्छता के लिये ही प्रयत्नशील होते। बहुत से तो यह भी कह बैठते कि हमारी उमर तो निकल गई, अब तुम यह नई-नई बातें करना।

अपेक्षा गांवों की अवहेलना रख कर केवल शहरों के जीवन को ही आनन्दमय बनाने के लिये रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है।

तन्दुरुस्ती में सुधार—

शहर में जाकर रहने के बाद थोड़े दिनों में ही मेरी तन्दुरुस्ती अच्छी हो गई, मेरे पेट में बढ़ी हुई तिल्ली भी मामूली अवस्था में आ गई तथा चेहरे का पीलापन भी दूर हो गया। मेरे माता पिता अक्सर मोहवश मिलने के लिये शहर में आ जाते थे और मेरी तन्दुरुस्ती देख कर प्रसन्न होते थे और संतोष प्रकट करते थे।

शिक्षा की वृद्धि—

शहर में जाकर मैं सजातीय स्कूल में भरती हो गया और पढ़ने में दत्तचित्त रहा। मैंने मास्टरों को सदा अपने कामों से प्रसन्न रखा, और सहपाठियों से मित्रता बढ़ाई। स्कूलों में शिक्षा के साथ २ बुरे मित्रों के कारण प्रायः नैतिक पतन और आदत खर्चीली हो जाती है, फैशन का भूत भी सवार होने लगता है और जो दृढ़ प्रतिज्ञ नहीं होते वे इनमें बुरी तरह फंस जाते हैं, पर सौभाग्यवश मेरी क्लास में ऐसे सहपाठी नहीं थे इससे मेरा बड़ा बचाव हुआ। धीरे २ मेरी पढ़ाई आगे बढ़ती गई, मैं प्रत्येक क्लास में अच्छे नम्बरों से पास होता

गया, इधर स्वास्थ्य सम्बन्धी उपयोगी बातें भी मेरी जानकारी में आने लगीं और मेरा दृढ़ विश्वास होता गया कि सफाई की कमी से ही मेरे गाँव में प्रति वर्ष ज्यादा बीमारी रहती है और वह सेनेटेशन में सुधार कर देने से दूर भी की जा सकती है। मैं अवकाश के समय जब कभी घरवालों को पत्र लिखता तो इसका जिक्र जरूर करता और यह प्रार्थना भी करता कि या तो स्वास्थ्य के नियमानुकूल वहाँ रहा जावे अथवा गाँव छोड़ कर शहर में चले आना ज्यादा हितकर है। जमींदारी का काम होने से घरवाले शहर में आने को राजी न होते थे और न आ ही सकते थे। शिक्षा की वृद्धि के साथ २ में स्काउटिंग में भी दिलचस्पी लेने लगा और उसमें मुझे अच्छी सफलता भी मिली।

छुट्टियों में गांव में—

स्कूल की गर्मी की छुट्टियों में मैं अपने गाँव में चला जाता और वहाँ सफाई रखने के लाभ बताता। पर खेद है कि लोग उसका महत्व नहीं समझते और न अपनी आदतों का सुधार कर व्यक्तिगत स्वच्छता के लिये ही प्रयत्नशील होते। बहुत से तो यह भी कह बैठते कि हमारी उमर तो निकल गई, अब तुम यह नई-नई बातें करना।

ऐन्ट्रेन्स पास—

धीरे २ कुछ वर्ष बीत गये। मेरी पढ़ाई आगे बढ़ती रही और भगवान् की कृपा से मैं एन्ट्रेन्स की परीक्षा में स्कूल भर में पहिला आया और जिले भर में सबसे अधिक नम्बर मुझे ही मिले। इससे मेरे दोस्तों ने बड़ी खुशी मनाई और मेरे मामाजी को भी बड़ा सन्तोष हुआ। शहर में मेरी प्रसिद्धि भी इससे बहुत बढ़ गई, लोग मुझे सम्मान देने लगे और मास्टरगण भी आदर से देखने लगे।

गर्मियों की छुटियों के बाद मैं कालेज में भरती हो गया। स्कूल और कालेज के वातावरण में मुझे बड़ा अन्तर मालूम हुआ। स्कूल की अपेक्षा यहाँ हम लोग अधिक स्वच्छन्द थे। स्कूलों में प्रवेश हुये संकुचित जातीय भावों ने यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ा था फिर भी बंधुत्व के भावों की जागृति सब में हो गई थी। मैंने स्कूल में स्काउटिंग कार्य अच्छी तरह से सम्पादन किया था। अतः मैं कालेज में स्काउटों का प्रधान नायक (Troop Leader) चुन लिया गया और थोड़े ही समय में मुझे तथा मेरे साथियों को आपद्काल में सेवा किस तरह और कैसे की जाती है इसका खासा अनुभव हो गया।

(५)

स्काउट्स—विद्यार्थी स्वयं-सेवक संघ—

कुछ वर्षों से स्कूलों में स्काउटों का प्रचार बहुत बढ़ गया है, ये एक प्रकार के शिक्षित स्वयं-सेवक होते हैं जो संकट के समय बिना किसी प्रकार का संकोच किये समान भाव से देश, समाज और राज्य की सेवा करते हैं। आजकल इनकी बड़ी प्रतिष्ठा समझी जाती है। लोग इन्हें आदर की दृष्टि से देखते हैं और यह लोग भी संकटावस्था में बिना पुकार आये ही, स्वयं आगे होकर दिलोजान से, ईश्वर की ओर से आये हुये दूत की भांति, सेवा करते हैं। सेवा-समितियाँ, सेवा-संघ आदि सब इन्हीं का प्रतिरूप है।

स्काउट्स (बालचर) सेवा में —

हमारा स्काउट दल थोड़े समय में बहुत उन्नत होगया। रियासत के कितने ही गाँवों में हम लोगों के स्काउट्स मेले (Rally) हुए और उनमें अच्छी सफलता मिली। जातीय मेलों और उत्सवों पर हम लोगों ने अच्छी सेवायें की। 'रेड़क्रास' के जलसों में हमारे स्काउट्स दलों के कार्यों से शहर वालों पर काफी असर पड़ा। पर इनमें भी अधिक हाल ही शहर में मोती चौंक में एक मकान में बड़ी तेज आग लगी, कई स्त्रियां तथा बच्चे उसकी लपेट में आ गये, खबर मिलते ही सबसे पहिले आग की जगह हमारे स्काउट्स

पहुँचे। आग बड़ी भयानक थी। आग में फंसे हुओं को निकालना बड़ा कठिन कार्य था, इसमें साहस की जरूरत थी। हमारे बालचरों ने अपने जीवन का मोह छोड़कर मनुष्यत्व के नाते जो स्तुत्य सेवा उस दिन की, वह शहर वालों को सदा स्मरण रहेगी। पुलिस तथा सरकारी अधिकारियों ने हमारे हिम्मत भरे व्यवस्थित कार्यों को देखकर बड़ी प्रशंसा की। आग के समय पानी की बड़ी कमी थी पर बालचरों ने बाल्टियों द्वारा पानी की जो रेल-पेल की वह आश्चर्यजनक और गौरव को बढ़ाने वाली बात थी। ऐसी प्रचण्ड अग्नि को जल्दी नष्ट करने में सफल होने और फंसे हुओं को बाल-बाल बचा लेने से शहर वालों को हमारी उपयोगिता मालूम हुई और उसका इनाम भी हमें खूब मिला।

सेवा का फल—

शीघ्र ही शहर के नेताओं ने एक जलसा करके प्रत्येक बालचर को एक-एक पदक (Medal) नगर वासियों की ओर से प्रदान किया और उत्साहवर्धक शब्दों में प्रशंसा भी की, साथ ही जो बच्चे व स्त्रियाँ बचाई गई उनके अभिभावकों ने एक हजार रुपये की थैली बालचर संस्था की उन्नति के लिये प्रदान की जो सहर्ष स्वीकार की गई। यह पहिला अवसर था कि हम लोगों को सेवा करने की कीमत मालूम हुई। लोगों ने हमारे कार्यों की सराहना की, इससे हम सभी को बड़ी खुशी हुई और भविष्य के लिये उत्साह भी बढ़ा।

बालचर संस्था की उन्नति—

इस बड़ी रकम से बालचर संस्था को बड़ी मदद मिली। इससे बालचर संस्था ने अपनी सेवाओं का दायरा और भी अधिक फैलाने का प्रयत्न किया। बालचरों की संख्या बढ़ाई गई, कितने ही विद्यार्थीगण स्वयं आगे होकर सम्मिलित होने लगे। उन्हें आकस्मिक दुर्घटनाओं के समय अनेक प्रकार से सहायता पहुँचाने की शिक्षा दी जाने लगी और प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ज्ञान भी कराया जाने लगा और जहाँ किसी प्रकार की आपत्ति आई सुनते, वहीं सबसे पहिले हमारी फौज (Troops) पहुँच जाती और सेवा द्वारा कष्ट पीड़ितों की सहायता कर नागरिकों को संतोष पहुँचाती। इससे थोड़े ही समय में बालचरों का प्रभाव और उपयोगिता उन लोगों पर भी जम गई जो इस संस्था के प्रति कुछ भी जानकारी नहीं रखते थे।

गांव से सहायता की पुकार—

धीरे धीरे गांवों में भी इसकी चर्चा फैलने लगी और वे लोग कष्ट के समय हमारी मदद भी चाहने लगे। आस पास के गाँवों की पुकार आने पर हम लोग वहाँ तुरन्त पहुँच कर उनके दुःखों में सहायक होते और उनको दूर करने का भरसक प्रयत्न करते, इससे गाँव वालों के साथ साथ अधिकारियों पर भी हमारे सेवा भाव का प्रभाव जमने लगा और वे केवल सहानुभूति

ही नहीं बतलाते थे, किन्तु सहायता करने को भी सदा तैयार रहते थे।

मदनपुरा गांव में हैजा—

इन्हीं दिनों मदनपुरा गाँव में हैजा बड़ी तेजी से फैल गया था। वहाँ के लोग इससे इतने घबड़ा गये कि बीमारों की सेवा सुश्रुषा करना तो दूर रहा, किन्तु अपना जीव बचाने के लिए उन्हें भगवान् के भरोसे छोड़ कर भाग जाते थे। ऐसी भयानक हालत में बालचरों ने गाँव में पहुँच कर बीमारों की सेवा सुश्रुषा की। दवादारू देकर उन्हें आराम किया और गाँव के कुओं में 'पोटास परमेगनाट' डाल कर कुए साफ कराये जिससे रोग दूसरे गाँवों में नहीं फैल सका और वहाँ भी दूर हो गया। इस सेवा के उपलक्ष में राज्य ने कृपा करके एक एम्बुलेन्स गाड़ी (Car) संस्था को प्रदान की जिससे पीड़ित लोगों को सहायता, सब साधनों सहित, जल्दी पहुँचाई जा सके।

(६)

ग्राम्य सेवा-समिति—

इन बातों से उत्साहित होकर और लोगों की बढ़ी हुई आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर और गाँवों की सहायता के लिए एक ग्राम्य-सेवा-समिति की स्थापना की गई और बालचर संस्था ने इसे हर प्रकार से सहायता करने का वचन

दिया। ग्राम्य-सेवा-समिति एक प्रकार से बालचर संस्था की शाखा समा थी, जो खास कर गाँवों में ही सेवा का कार्य करती थी पर, उसकी उन्नति का भार बालचर संस्था पर ही था।

ग्राम्य-सेवा-समिति के कार्य—

ग्राम्य-सेवा-समिति वाले यथा नियम गाँवों में पहुँच कर स्वच्छ रखने के नियमों को गाँव वालों को सिखलाते थे और स्वयं अपने हाथों वहाँ की सफाई करके लोगों को उत्साहित करते थे जिससे ऐसे कामों के प्रति घृणा व नीचापन हो जाने का भाव दूर किया जाता था। लोगों को आलस्य तथा लापरवाही दूर करने के लिये समझाते, व्याख्यान देते, "मैजिक लेन्टर्न शो" बतलाते और छोटे छोटे ट्रेक्ट भी पढ़ने को मुफ्त में बाँटते। गाँव वालों की आदत गाँव के कूड़े-करकट को कहीं दूर फेंकने की करने के लिये उन्हें अपने सामने सफाई करने के लिये कई तरह से प्रोत्साहित करते।

तालाब तथा कुओं के पास कोई पाखाना न जावे इसका उपदेश देते। कुओं पर स्नान न करने, न कपड़े धोने और गलीचत न होने देने की ओर भी ध्यान रखने की ताकीद की जाती थी। कुओं के ऊपर मुंह पर चारों ओर प्राकार (मुंडेर) बनाने की आवश्यकता समझाई जाती जिससे कुओं के भीतर गलीचपन न जा सके। इस कार्य के लिये आर्थिक सहायता भी दी जाती। आस पास के खड्डों में पानी जमा न होने पावे इसके

लिये उन्हें मिट्टी में पूर देने का प्रयत्न होता और बस्ती के निकट और गड्ढे न खोदे जावें इनकी सम्हाल रखने को समझाया जाता। मकानों में हवा के आवागमन के लिये खिड़कियाँ रहें और वे हमेशा खुली रखी जावें तथा रात्रि में सोते समय भी बन्द न की जावे इसका लाभ बतलाया जाता। गाय भैंसों के बाँधने की जगह साफ रहे और वहाँ गीलापन हर समय रहने न दिया जावे इत्यादि अनेक आवश्यक और उपयोगी स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें उन्हें समझाई जाती थीं और प्रत्यक्ष करा भी दी जाती थीं। गाँवों की गलियों की सफाई बिना किसी हिचकिचाहट के सब गाँव वालों के सामने कर दी जाती थी जिससे उन पर बड़ा असर पड़ता और वे भी प्रोत्साहित होकर ऐसे कामों को हल्का समझना भूल जाते और सफाई बनाये रखने के प्रेमी बन जाते थे। इनके सिवाय आकस्मिक घटनाओं के समय उन्हें सब प्रकार से सहायता दी जाती और बीमारी में सेवा सुश्रुषा करके उनकी हिम्मत बढ़ाई जाती थी।

ग्राम्य-सेवा-समिति की सेवाओं से लाभ—

इस प्रकार ग्राम्य-सेवा-समिति से सार्वजनिक स्वास्थ्य के हित की बातें गाँव वालों को समझा कर उनके अनुसार चलने के लिए लगातार प्रोत्साहित करने का कार्य किया जाने लगा। इससे गाँव वाले बहुत जल्दी हम लोगों को अपना हितचिन्तक समझने लगे और हमारे बताये अच्छे कार्यों को अपना कर उनके अनु-

सार चलने का अभ्यास करने लगे जिससे गाँव वालों का बड़ा हित हुआ। सफाई के कारण उनके गाँव साफ सुथरे दीखने लगे और गाँवों में हर साल जो बीमारियाँ हो जाया करती थीं वे बन्द हो गईं जिससे उन्हें वास्तविक लाभ और हित हुआ।

(७)

सम्वत् १९७४ की बीमारी—

सं० १९७४ में बहुत पानी बरसा। पानी रोज बरसता था। अनेक बड़े बड़े तालाब पानी की ज्यादती से फूट गये और कई गाँव बह गये। मेरे गाँव में तो पानी और भी अधिक हुआ। रेल की पटरी बह गई। कई दिन तक मुसाफिरों का आना जाना बन्द रहा। डाक भी बन्द रही। गाँव के निकट पानी ही पानी हो गया था। एक दफे तो हेमावश का बाँध टूट जाने से गाँव के बह जाने तक की नौबत आगई पर भगवान् की कृपा से आई हुई बाढ़ कुछ मकानों को बहा कर ही चली गई। वर्षा से अनेक मकान गिर गये, रास्ते बन्द हो गये, स्थान २ पर कीचड़ ही कीचड़ नजर आता था और मोहल्लों में रुका पानी पड़ा हुआ सड़ता था। मच्छरों की ज्यादती हो गई, उनसे बचना सहज नहीं था, रात को उनके मारे नींद नहीं ली जा सकती थी। ऐसी हालत में बीमारी भाद्रपद मास में ही शुरू हो गई और बहुत तेजी से फैलने लगी। बीमारी का जोर भी ज्यादा था, बूढ़े बड़ेरों का कहना था कि पहले ऐसी बीमारी इतनी जोरदार कभी

नहीं हुई थी, घर घर में बीमार बढ़ने लगे। साधारण दवायें कुछ फायदा नहीं करती थीं। वैद्य लोग नुसखे लिखते २ थक गये। अंग्रेजी अस्पताल खुल गया था पर अभी तक लोगों का विश्वास उस पर नहीं जमा था। इससे बहुत थोड़े लोगों ने उससे लाभ उठाने का प्रयत्न किया कुछ लोगों ने बाहर से पेटेन्ट दवायें भी मंगवाई, पर वे ऐसी कारगर सिद्ध नहीं हुई और न उनसे पूरा ही पड़ सकता था। बीमारी की ज्यादती बढ़ती ही जाती थी, जिधर देखिये उधर ही इसी की शिकायत थी। लोग तंग हो गये। बीमारों के पथ्य की व्यवस्था में रुकावटें आने लगी। लोग दीन होकर सहायता के लिये पुकार करने लगे।

ग्राम्य-सेवा-समिति को सहायता के लिए तार—

ऐसी विकट अवस्था में गांव वालों को फंसा देख कर स्कूल के हैड मास्टर साहब ने ग्राम्य-सेवा-समिति के नाम सहायता के लिए पंचों से सलाह करके तार भेजा। तार मिलते ही हम लोगों ने व्यवस्था शुरू की और कालेज की छुट्टी लेने के लिए श्रीमान प्रिन्सिपल सूरजप्रकाशजी साहब के नाम प्रार्थना-पत्र भेजा और साथ में आया हुआ तार भी नत्थी कर दिया। हमें दूसरे ही दिन छुट्टी मिल गई और दवा दारू के बाँटने के लिए राज्य से सहायता भी कालेज के अधिकारियों ने दिलाई। अतः हम लोग उनके अत्यन्त कृतज्ञ रहे।

सहायता के लिये प्रस्थान—

हम लोग भादवा सुदी १३ को उक्त गाँव में पहुंचे। उस समय वहाँ चारों ओर ज्वर का साम्राज्य छा रहा था। घर २ में बुखार से पीड़ित लोग असहायावस्था में 'हाय हाय' कर रहे थे। बीमारी और कुछ नहीं मौसिमी बुखार था जिसे आजकल मलेरिया ज्वर के नाम से पुकारते हैं।

गांवों में सेवा-समिति का डेरा—

हम लोगों ने तालाब के किनारे एक बगीची में डेरा जमाया। और गाँव में घूम फिर कर वहाँ की परिस्थिति जानी। दूसरे दिन ढिंढोरा पिटवा दिया कि जिस किसी व्यक्ति को कोई सहायता की जरूरत हो, वे हमें खबर दें, हम सेवा सुश्रुषा करने को तैयार हैं।

हमारी व्यवस्था—

हमने सुविधा के लिए अपना कार्यक्रम बाँट लिया और तीन विभाग आपस में कर लिये। कुछ स्वयं-सेवकों के जिम्मे गाँव की सफाई कराने का काम रखा गया, कुछ बीमारों की सेवा सुश्रुषा करने के लिए तैनात किए गए और कुछ को घर २ जाकर दवा पिलाने का काम सुपुर्द किया गया। गाँव में अलग२ वार्ड (भाग) मुकर्रर किये गये। गाँव के कुछ उत्साही नवयुवकों ने भी हमारा साथ दिया। स्कूल मास्टरों से भी खासी मदद मिली। इस तरह

सफाई के नियम घर २ जा कर समझाए जाने लगे जिससे बहुत जल्दी सुधार हुआ और जो काम वर्षों से पुकार होनी रहने पर भी कुछ नहीं हो पाया था वह इस बीमारी की अवस्था में शान्तिपूर्वक बिना किसी भी आपत्ति के हो गया। सफाई के काम में स्वयं-सेवक स्वयं जुट गए और उन्होंने मानापमान व ऊंच नीच का खयाल किए बिना ही गलियों का कूड़ा करकट हटाया, झाड़ू दिए, और रास्ते साफ किए जो उस समय की सामाजिक अवस्था को देखते बहुत ही स्तुत्य थे।

सेवा सुश्रुपा करने वाले स्वयं-सेवकों के कार्य—

सेवा सुश्रुपा करने वाले स्वयं-सेवकों ने सब से पहिले पथ्य के लिए घर २ बढ़िया दूध पहुँचाने का प्रबन्ध किया। दूध में पानी मिला देने तथा उसकी मलाई को निकाल देने की प्रवृति इस गांव में वर्षों से चालू है पर इससे दूध के गुण कम हो जाते हैं और वह बीमार के लिए लाभदायक नहीं होता। साथ ही अज्ञानता वश घोसी, हलवाई तथा साधारण जनता दूध आदि को खुले बरतनों में रख कर बेचते हैं साथ ही उपयोग करते हैं जिससे उसमें मक्खियां तक पड़ जाती, फूस, गोबर, धूल आदि बुरे परमाणु भी मिल जाते, जिससे रोग पैदा करने वाले सूक्ष्म जन्तु पैदा होकर सेवन करने वालों को लाभ के स्थान में हानि पहुँचती। अतः इन आपदाओं से बचने के लिए स्वयं-सेवकों ने दूध को अपने सामने दुहा कर बंद बरतनों में बीमारों के यहाँ आवश्यक परिमाण में

पहुँचाना आरम्भ किया और घर वालों को वतलाया गया कि अमुक वीमार को अमुक मात्रा में दूध दिया जावे। जिन वीमारों के पास सेवा करने वाला घर का कोई आदमी नहीं था उन्हें महेश्वरियों के पंचायती नोहरे में रखने की व्यवस्था की गई। नोहरा अस्थाई मलेरिया-आश्रम वना दिया गया और ऐसे लोग सव वहीं लाकर रखे गए और उनके प्रवन्ध के लिए स्वयं-सेवक तैनात किए गए जो रात-दिन वहीं रह कर उनकी सम्हाल रखते थे। वह स्थान खासा अस्पताल सा हो गया और काफ़ी संख्या में वहाँ ऐसे मरीजों का इलाज किया गया जो सेवा सुश्रुषा के विना अपने घरों में कष्ट पाते थे।

वीमारों को पथ्य में दूध के सिवाय कुछ न देने की हिदायत घर २ की गई। दूध से रोगी की ताकत वनी रहती है और वमन (उल्टी) प्यास आदि उपद्रव नहीं होते। वुखार चढ़ जाने पर घवड़ाहट भी वहुत नहीं होती और वुखार का विष भी जल्दी दूर हो जाता है। जो लोग वीमारी में मन चाहा खाते हैं वे अधिक दिन भुगतते हैं और अधिक कमजोर भी हो जाते हैं।

पीने के लिए उवाले पानी की व्यवस्था वतलाई गई और जहाँ जरूरत हुई वहाँ स्वयं-सेवकों ने स्वयं पानी उवाल कर रोगी के पास रखने का प्रवन्ध किया।

इनके सिवाय वीमारों को ढाढस वंधाया गया, उनके ओढ़ने विछाने का प्रवन्ध किया गया तथा जो लोग तंग थे उन्हें खाने पीने के लिए आर्थिक सहायता भी दी गई।

मच्छरों से बचने के लिए खास हिदायतें दी गई। सामर्थ्य
ले मसहरी लगाने लगे। कुछ खुले बदन पर युकलिपटस मिले
ल की मालिश करने लगे और कुछ लोगों को सीट्रोनल मिला
ल हाथ पैरों में लगाने के लिए दिया गया जिससे मच्छर उनके
ास सुगन्ध के कारण न आवें और वे रात में मच्छरों से बचे
ह सकें।

कहीं २ 'फ्लीट' भी छिड़का जाने लगा और कहीं पर संध्या
को नीम के पत्ते, गंधक और छाणों के धुंए की व्यवस्था की गई।
यह सब मच्छरों से बचने के लिये उपाय थे। इस रोग को उत्पन्न
करने वाले मच्छर ही माने जाते हैं, अतः मच्छरों को उत्पन्न न होने
देने तथा उनसे बचने के लिये इन सब बातों का करना जरूरी
समझा गया।

इलाज करने वाले स्वयं-सेवकों के कार्य—

ज्वर के विष को दूर करने और आँत साफ करने के लिये
सबसे पहिले बुखार वाले को जुलाब दिया जाता था। जुलाब से
२-३ दस्त हो जाते थे और पेट हलका हो जाता था, फिर जो
लोग अंग्रेजी दवा लेते थे उन्हें तो कुनेन का सलफरिक एसिड में
बनाया मिक्श्चर दिया जाता था जिससे बुखार उसी दिन या दूसरे
दिन चमत्कारिक रूप से रुक जाता था। बुखार उतरने पर ८ दिन
तक पाँच पाँच ग्रेन कुनेन की गोली रोज दे दी जाती थी जिससे
बुखार फिर से नहीं चढ़ता था।

चढ़े हुये बुखार में प्यास व उल्टियाँ बंद करने और घबराहट दूर करने के लिये नींबू का शरबत, मुनक्का का शरबत, वर्फ, लेमनेड आदि भी थोड़े २ दिये जाते थे जिससे रोगी को शान्ति मिल जाती थी। जो लोग अंग्रेजी दवा नहीं लेते थे उनके ताव को रोकने के लिये तुलसी के एक तोले रस के साथ पाँच तोला सुदर्शन अर्क बुखार आने के पहिले तीन वार दिया जाता था। १-२ दिन में इससे भी बुखार रुक जाता था पर कुनेन के समान जल्दी और निश्चित असर नहीं होता था।

प्रारम्भ में कुनेन का मिकश्चर लेते लोग डरते थे। उनकी शिकायत थी कि यह गर्मी बहुत करता है पर उससे जब लोगों का जल्दी २ बुखार उतरने लगा तो लोग खुशी २ उसे अपनाने लगे। गर्मी का वहम दूर करने के लिये उन्हें दूध खूब पीने की सलाह दी गई। नींबू का रस भी खानपान में लेने से इसकी गर्मी दूर करता है, बतलाया गया।

स्वयं-सेवक अपने २ वार्ड की बीमारी की लिस्ट (List) रखते और जो नये बीमार होते उनका भी नाम दर्ज कर लेते जिससे दवा देने वाले उनके घर पर जाकर दवा पिला आते और रोगी को संतोष दे आते। यदि कभी किसी को बुखार तेज हो जाता और ज्यादा घबराहट होती तो तुरन्त खबर पहुँचाई जाती थी और उनका योग्य उपचार किया जाता था।

सब काम रोगियों को सुविधा पहुँचाने वाले होते थे और उन्हें हर प्रकार से संतोष व सहायता दी जाती थी।

इस तरह गाँव वालों के सहयोग और सहानुभूति से थोड़े ही समय में नये बीमार होने बंद होगये और पुराने बीमार शीघ्र२ आराम होने लगे और बीमारी काबू में आगई।

सेवा का प्रभाव—

हम लोगों की निःस्वार्थ सेवाओं का गाँव वालों पर बड़ा असर पड़ा। वे हम लोगों की बातों को बड़े चाव से सुनते और उसके अनुसार चलने के लिये पूरी कोशिश करने लगे। पहिले सफाई की बातों पर जो अवहेलना की जाती थी, आज उससे उल्टी उनको स्वीकार करने के लिये उत्सुकता बतलाई जाती थी। जो लोग कुछ वर्ष पहिले मेरी कही सफाई की बातों पर लापरवाही दर्शाते थे आज वे ही आगे होकर उन्हें अपना कर दूसरों को उनके अंगीकार करने का उपदेश करते थे। इससे व्यक्तिगत स्वास्थ्य पालन की अच्छी २ बातों के प्रचार में बड़ी मदद मिली।

(९)

मेरी प्रसन्नता—

इस सेवा से मुझे बड़ा संतोष हुआ। मुझे अपनी जन्मभूमि की सेवा करने का ऐसा अवसर मिल गया इसके लिये मैं अपने को बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूँ। इससे मेरे गाँव में मेरी प्रतिष्ठा भी बढ़ी और आदर भी मिला। लोग मेरे माता पिता के पास

जा जाकर मेरी प्रशंसा करते थे और मुझे आशीर्वाद देते थे। पर दरअसल यह तो मनुष्यत्व की दृष्टि से एक कर्तव्य था जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य अनुसार करना ही चाहिये। फिर भी मुझ पर गाँव वालों का यह ऋण था कि गाँव में पैदा हुआ व्यक्ति दुःख में सेवा व सहायता करे साथ ही गाँव की आबादी बढ़ाने और वहां के रहने वालों की उन्नति करने में अपना फ़र्ज समझे।

लौटने की तैयारी—

डेढ़ महीने के बाद बीमारों की संख्या एकदम घट जाते से हम लोगों ने लौटने की तैयारी की। अस्थायी वार्ड आदि सब बंद कर दिये, मांगी वस्तुयें लोगों को पीछी लौटाई, हिसाब-किताब लेन-देन सबका साफ किया और गाँव वालों से इजाजत ली।

गांव वालों का आभार—

गाँव वालों ने इस पर बहुत ही प्रेम प्रदर्शित किया और कृतज्ञता प्रकाश करने के लिये सराफे बजार में एक सभा भी एकत्रित की जिसमें सभी श्रेणी के लोग अधिक संख्या में उपस्थित हुये थे। वहाँ सर्व सम्मति से निश्चय किया गया कि स्वयं-सेवकों का आभार माना जावे और इस यादगार में गाँव वालों की ओर से भेंट में एक थैली संस्था को श्री दरबार साहब की प्रधानता में प्रदान की जावे। साथ ही गाँव में भी ऐसी एक शाखा सभा स्थापित की जावे जो समय पर लोगों को आपद्‌काल में सहायता

कर सकें तथा सार्वजनिक सफाई और स्वच्छता के लिये म्युनिसिपल कमेटी की स्थापना करने के लिये श्री दरबार साहब से प्रार्थना की जावे।

रवानगी के दिन गाँव वालों ने बड़ा सन्मान किया। पहुँचाने के लिये स्टेशन तक भीड़ होगई। वहाँ एक मेला-सा भर गया। स्वयं-सेवकों के गले में मालाओं का बोझ इतना होगया कि उनका सम्हालना कठिन होगया। स्टेशन वालों ने भी बड़ी खातिरदारी की। गाड़ी छूटने पर खूब हर्ष ध्वनि हुई।

फिर से शहर में—

गाँव में पूर्ण शान्ति हो जाने से हम लोग गाँव से विदा होकर नियत समय पर शहर में आगये। स्टेशन पर कालेज के विद्यार्थियों ने हम लोगों का स्वागत किया, कई प्रोफेसर भी आशीर्वाद देने आये। स्टेशन पर एक छोटा-सा जलसा भी किया गया और बड़ी देर तक खासी धूम-धाम रही। हम लोगों की पढ़ाई में कमी जरूर हुई क्योंकि इतना लम्बा समय जाने की हमने आशा नहीं की थी। यह पहिला ही अवसर था कि हमें अपना समय इतना अधिक खर्च करना पड़ा। पर, इसके साथ ही हमें यह संतोष भी था कि लोग भविष्य के लिये स्वच्छता रखने के लिये उत्सुक हो गये हैं और इसके लिये अनेक स्वार्थ त्याग करने को तैयार हैं।

हमारे साथियों में सिर्फ शिवलाल को वहाँ बुखार आया.

था और वह दो तीन दिन रहा। कुनेन के सेवन से वह शीघ्र आरोग्य हो गया। अन्य किसी स्वयंसेवक को कोई कष्ट नहीं हुआ। हम लोग रोज तुलसी और कुनेन का सेवन करते थे और मच्छरों से बचाव रखते थे जिससे ज्वर से बचे रहे।

फिर कालेज में—

शहर में आकर हम लोगों ने पढ़ाई की तरफ ध्यान दिया और जो कमी १।। महीने में हो गई थी उसे पूरी करने की कोशिश की और हमें पूर्ण आशा रही कि हम लोग परीक्षा में अच्छे नम्बरों से पास होंगे।

ग्राम्य-सेवा के समाचार अखबारों में भी निकले। चारों ओर से धन्यवाद के पत्र आने लगे और हर किसी ने हमारे कार्यों की सराहना की।

(१०)

निमन्त्रण—

वार्षिक परीक्षाओं के वाद जून में वालचरों को ग्राम्य-सेवा-समिति के स्वयंसेवकों का निमन्त्रण पत्र मिला कि श्री महाराजा साहब के सभापतित्व में ता० २१ जून को सायंकाल ४ बजे पल्लीपुरा गाँव में एक दरबार भरा जावेगा जिसमें मलेरिया में पीड़ित लोगों की सेवा करने के उपलक्ष्य में, ग्राम्य-सेवा-समिति के स्वयं-सेवकों का, सम्मान किया जावेगा। इसी दिन हम लोगों

का परीक्षा फल भी निकलने वाला था। हमारे प्रोफेसरों को भी यह निमन्त्रण पत्र मिला था। शहर के अन्य गण्यमान्य सज्जनों को भी जलसे में शरीक होने के लिये सूचना जारी हुई थी।

भारी जलसा, जनता की भीड़—

नियत दिन गाँव में कचहरी के अहाते में एक भव्य शामियाने के नीचे जलसा भरा गया। श्री महाराजा साहब ने भी पधारने की कृपा की। प्रधान मिनिस्टर आदि उच्च कर्मचारी भी उपस्थित हुये। सिविल सर्जन साहब तथा रियासत के बड़े बड़े डाक्टर, वैद्य तथा प्रतिष्ठित एवं सम्मानित पुरुष भी सम्मिलित हुये। गाँव के लोग तो सभी जमा होगये। किसी को कोई रोक टोक नहीं थी। इससे भीड़ इतनी हो गई कि लोगों को बैठने तक को जगह नहीं मिली थी। पुलिस का प्रबन्ध बढ़िया था। जनता श्री दरबार के दर्शनों की इच्छुक हो रही थी और सब के चेहरे पर आनन्द प्रदर्शित हो रहा था।

जलसे में श्री महाराजा साहब की उपस्थिति—

सभा मण्डप में ठीक चार बजे श्री महाराजा साहब पधारे और उपस्थित जनता ने खड़े होकर बड़े प्रेम और आदर के साथ उनका स्वागत किया और 'अन्नदाता की जय हो' की ध्वनि से आकाश को गुंजा दिया।

जलसे में शरीक सिविलसर्जन साहब का व्याख्यान-

इसके पश्चात् श्री दरबार साहब की आज्ञा से सिविल सर्जन साहब ने खड़े होकर प्रारम्भ में ग्राम्य-सेवा-समिति के मेम्बरों की बीमारी में सहायता करने के लिए प्रशंसा की और धन्यवाद दिया। भाषण में आपने बतलाया कि गत वर्ष पानी अधिक होने से गाँवों में मलेरिया बहुत जोरदार और भयानक रूप से फैला था। सं० १९५७ से भी गत वर्ष मलेरिया का जोर ज्यादा रहा है। सं० १९५७ में मलेरिया बहुत सख्त फैला था, उस समय भी घर-घर में लोग बीमार हो गये थे और खेती अच्छी पैदा होने पर भी उसकी खास सम्हाल के लिए कोई तन्दुरुस्त किसान नहीं मिलता था। इस बीमारी के सम्बन्ध में आप लोगों ने प्रत्यक्ष में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया है। सेवा-समिति के स्वयंसेवकों द्वारा आपको व्यावहारिक शिक्षा मिल चुकी है। अतः इस सम्बन्ध में विशेष विवेचन की जरूरत नहीं है फिर भी ध्यान में रखने के लिये मैं यह कहना चाहता हूँ—

"मलेरिया ज्वर मच्छरों के काटने से फैलता है। 'एनोफलीन' जाति के मच्छर इस रोग को पैदा करते हैं। वे जिस मनुष्य को काटते हैं उसे मौसमी ज्वर आ जाता है। फिर बुखार वाले व्यक्ति को जब मच्छर काटते हैं तो बुखार की छूत मच्छरों को लग जाती है और इस तरह एक दूसरे के कारण बीमारी कभी-कभी ज़ोरों से फूट निकलती है।

वर्षा ऋतु में, जब मनुष्य की ओज शक्ति (Vital power) घट जाती है उस समय मलेरिया का विष मच्छरों के काटने से जो शरीर में पहुँचता है वह खून में बढ़ कर ज्वर पैदा करता है अतः इस रोग से बचने का उपाय मच्छरों को नहीं उत्पन्न होने देना है। मच्छरों से बचना सहज नहीं है। बहुत सावधानी रखने पर भी ये कहीं न कहीं काट ही खाते हैं। रात्रि में इनका ज़ोर अधिक रहता है। गर्मी में हर समय बदन ढका नहीं रखा जा सकता। नींद में इसका भान भी नहीं रहता है, अतः ऐसे अवसरों पर मच्छरों की बन आती है। फिर भी यदि समझ के साथ प्रयत्न किया जावे तो बहुत कुछ बचाव किया जा सकता है। रात्रि में पलंग पर मशहरी लगा कर सोने से मच्छरों से रक्षा हो सकती है, पर ग़रीब लोग इससे फायदा नहीं उठा सकते न उनके पास इतने साधन ही होते हैं कि वे बच सकें, फिर भी जो सामर्थ्य रखते हैं वे इसका उपयोग अवश्य करें। इसमें किया हुआ खर्च वृथा नहीं जाता। बीमारी में इलाज में जो खर्च होता है तथा खाट में पड़े रहने से जो तंगी आ जाती है उसको देखते इसमें किया खर्च हमेशा सस्ता पड़ता है। पर जो लोग रोज कमाते और खाते हैं और जिन्हें ओढ़ने बिछाने को पूरे कपड़े नहीं मिलते वे इसका लाभ नहीं उठा सकते। उन्हें तो सब से अच्छा उपाय यही है कि वे अपने आस पास में मच्छरों की उत्पत्ति न होने दें। मच्छर कुछ सुगन्धों से दूर भागते हैं, अतः यदि खुले बदन पर 'सिट्रोनल' तेल

मच्छरों से बचने के उपाय

या 'युकलीप्टस' तेल मल दिया जावे तो कुछ समय तक मच्छर पास नहीं आते। धुंए से भी मच्छर भागते हैं अतः घर में धुंआ करने से मच्छरों से रक्षा हो सकती है। धुंआ कंडों का वा नीम के पत्तों का किया जा सकता है। ये सब उपाय व्यक्तिगत रूप में किये जा सकते हैं और क्षणिक लाभ पहुँचाते हैं पर यदि पास ही कहीं मच्छरों की उत्पत्ति होती हो तो उनकी बढ़ती के आगे ये सब उपाय भी बेकार होते हैं। अस्तु, मलेरिया ज्वर की उत्पत्ति न होने देने के लिये मच्छरों की पैदाइश ही रोकना सब से अच्छा उपाय है।

मच्छर स्थिर जल की सतह पर, सील या दलदल वाली जमीन पर, घास पात पर, अंधियारी जगहों पर, नीची जगहों पर

मच्छरों के पैदा होने के स्थान

प्रायः पैदा होते और बढ़ते हैं अतः गांव के आस पास के ऐसे स्थानों को सुधार देना चाहिये। जिससे ये पैदा न हों। यह काम किसी एक व्यक्ति का नहीं है, सबको मिल जुल कर करना चाहिये। मुझे खुशी है कि ग्राम्य-सेवा-समिति के सभासदों ने

मच्छरों की उत्पत्ति रोकने के उद्योग में सब का सहयोग

सबसे पहिले इसी ओर ध्यान दिया और यही कारण था कि यहां बुखार की बीमारी इतनी जल्दी दूर हो गई। बीमारी का इलाज करने से कहीं अधिक बीमारी के कारणों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। इसमें किया हुआ प्रयत्न वृथा नहीं जाता। इसमें स्थायी

लाभ होता है। इस साधना के लिये गांव के आस पास जहां कहीं खड्डे वा जमीन नीची हो और वहाँ पानी जमा होता हो तो उस पानी को बहाकर जमीन को समथल बना देनी चाहिये और गांव के निकट जहाँ घास पात पैदा हो गये हों उसे साफ करा देना चाहिये। गांव के मैले पानी की मोरियें आदि समय २ पर फिनाइल से धुलवा कर उनमें घासलेट तेल छिड़कवा देना चाहिये। जहां मूठन का पानी डाला जाता हो, जहां गाय, भैंस आदि जानवर बांधे जाते हों वहां पर मच्छरों की उत्पत्ति होती है, अतः वे स्थान स्वच्छ रक्खे जावें और गीली जगहों पर सप्ताह में दो बार घासलेट छिड़का जावे।

घरों में पानी भरने के बरतनों (मटकी, घड़ा, पीपा, बाल्टी, डिब्बा, कोठी, कुंडी, हौज, खेली आदि) को एक बार रोज साफ कर देना चाहिये जिससे मच्छरों को वहां अंडे देने का अवसर न मिले। घर में नल की जगह, टूंटी, स्नानघर, परेंडा, मूठन और धोवन के पानी डालने के स्थान, टट्टी, पेशाबघर, मोरी, हौज, सेसफूल आदि जगहों पर अकसर मच्छर पैदा हुआ करते हैं, अतः इन स्थानों को कभी २ सूखा रखने का भी प्रयत्न किया जावे। समय २ पर ये स्थान चूने से पुतवाये जावें और वहां घासलेट तेल भी अकसर डाला जावे। वर्षा काल में तो खासतौर पर ध्यान रखा जावे। इन कामों में किया परिश्रम बहुत लाभ पहुँचाता है और मच्छरों की उत्पत्ति को रोकता है जिससे मलेरिया

नहीं होता और जहाँ मलेरिया नहीं होता वहाँ कितनी ही दूसरी बीमारियाँ भी नहीं होतीं और लोग कष्ट से बचते हैं और साधारण लोग तन्दुरुस्त बने रह कर तंगी नहीं भुगतते। घर वालों को बीमारी की चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

लाभ

मलेरिया वालों को शुरू में जोर से सर्दी लगती है जिससे दांत बोलने लग जाते हैं और श्वास भी उस समय जल्दी २ चलने लगता है। कितनों ही को उल्टियें भी होने लगती हैं। शुरु में हाथ पैर ठण्डे मालूम पड़ते हैं। यह अवस्था कुछ मिनटों से लेकर एकाध घण्टे तक रहती है। बच्चों को ताणे आने लग जाती हैं और बेचेत भी हो जाते हैं। सर्दी शुरु होने पर तापमान ९९ से १०१ डिग्री तक हो जाता है। सर्दी मिटने पर गर्मी एक दम वा धीरे-धीरे बढ़ जाती है। शरीर खुश्क व जलने लगता है। उल्टियाँ चालू रहती हैं, प्यास बहुत लगती है और कभी २ पीया हुआ पानी तुरन्त उल्टी हो जाती है, शिर में पीड़ा होती है, हाथ पैर दुखते हैं और कोई २ रोगी बकने भी लगता है, किसी २ को दस्तें लग जाती हैं पर मामूली अवस्था में कब्जी रहती है, पेशाब कम होता है। यह अवस्था एक घण्टे से लेकर कई घण्टों तक रहती है फिर धीरे २ गर्मी कम होने लगती है, पसीना, आने लगता है। पसीना पहिले शिर के बालों में आता है फिर सारे शरीर में आकर बुखार उतर जाता है और तापमान आरोग्यावस्था तक

मलेरिया के लक्षण

पहुँच जाता है। बुखार उतरने के बाद तबियत निरोग-सी मालूम पड़ती है किन्तु बुखार फिर दूसरे दिन अथवा तीसरे, चौथे दिन सर्दी लग कर आ जाता है और पहिले की तरह कुछ घण्टों तक रह कर उतर जाता है। बार २ इस तरह बुखार आने से शरीर कमजोर हो जाता है, भूख बन्द हो जाती है, चहरा फीका दिखने लगता है और तिल्ली व लीवर बढ़ जाते हैं। बुखार किसी किसी को लगातार कई दिन तक बना रहता है। उल्टी, सिर पीड़ा अनिद्रा आदि उपद्रव भी साथ में होते हैं। कुछ अजान लोग उस समय निकाला या पानी झरा बतला कर दवा बन्द कर देते हैं, जिससे रोगी अधिक दिन तक बीमारी भुगतता है।

इस बीमारी का अकसीर इलाज कुनेन है। कुनेन से बढ़िया कोई दवा इस ताव को रोकने की अभी तक जानकारी में नहीं आई है। जो लोग बहम से कुनेन नहीं लेते वे इस बीमारी में ज्यादा दिन बीमार रहते हैं। कुनेन के प्रति जो लोगों का वहम है, वो निराधार है। जो लोग गर्मी करने की शिकायत करते हैं वे कुनेन लेने की तरकीब नहीं जानते। कुनेन की गर्मी दूध पीने से दूर हो जाती है।

मलेरिया का इलाज

बीमार होने पर सबसे अच्छा उपाय यह है कि शुरु में दस्त की दवा ले ली जावे जिससे आंतें साफ हो जायँ और कुनेन का असर भी जल्दी और पूरा हो। पश्चात् जिस समय बुखार न हो

उस समय कुनेन १० ग्रेन नींबू के रस में ले लिया जावे और चार घण्टे बाद यदि बुखार न चढ़ा हो तो १० ग्रेन कुनेन और ले लिया जावे। बुखार उसी दिन बन्द हो जावेगा अथवा दूसरे दिन कुनेन फिर लेने की जरूरत होगी और बुखार नहीं आवेगा। कुनेन २-३ दिन तक लगातार लिया जावे। बुखार न हो तो भी कुनेन जारी रखा जावे जिससे शरीर में मलेरिया का जहर न रहे। थोड़ी २ कुनेन तो बुखार उतरने के एक सप्ताह बाद तक जारी रखी जावे जिससे भूख अच्छी लगे और ताकत आ जावे।

मलेरिया से हर साल भारत में लाखों आदमी मरते हैं और पीड़ित होने वालों की संख्या तो अगणित है। पर, यदि कुनेन का नियम पूर्वक सेवन कराया जावे तो सब लोग इस बीमारी से बच सकते हैं।

वर्षाकाल में स्वस्थ पुरुष को भी मलेरिया से बचने के लिये कुनेन रोज लेना चाहिये जिससे मलेरिया का विष शरीर में न फ़ैल सके।

मलेरिया ज्वर वालों को लंघन करने की जरूरत नहीं है।

मलेरिया में पथ्य

यदि कोई खास उपद्रव हो अथवा बुखार उतरता ही न हो तो सिर्फ दूध ही का सेवन कराया जावे। नींबू, अंगूर, बर्फ, लेमनेड़, सोडा आदि भी इस बुखार में सेवन कराये जा सकते हैं।

प्रधान मंत्री साहब का भाषण—

सिविल सर्जन साहब के पश्चात् श्रीमान् प्रधान मिनिस्टर साहब ने ग्राम्य-सेवा-समिति के लाभों की विवेचना करते हुये गाँव वालों को यह सलाह प्रदान की, कि दैवी आपदाओं और आकस्मिक घटनाओं के समय सहायता पहुँचाने के लिये प्रत्येक गाँव में सेवा-समितियाँ स्थापित की जानी जरूरी हैं। समय पर बाहर वालों से सदा मदद नहीं मिल सकती। दूसरों के भरोसे रहना ठीक नहीं। गाँव वालों को स्वयं उद्यमी होना चाहिये और जो नवयुवक सेवा करने के उच्च भावों से जागृत हों उनका संगठन करके लाभ उठाना चाहिये। बंधुत्व के नाते सेवा करना सब से महान पवित्र कार्य है, जो लोग इसका कुछ भी भाव रखते हैं वे महान पुरुष हैं। श्रीमान् महाराजा साहब ऐसे कार्यों के प्रति पूर्ण सहानुभूति रखते हैं और हर प्रकार से उन्हें उत्साहित करने को तैयार हैं।

सेवा-समिति स्थापित करने की सलाह और राज्य की सहायता

श्रीमान् महाराजा साहब ने मुझे यह प्रगट करने की आज्ञा दी है कि यहाँ पर सेवा-समिति स्थापित की जावे और उसके खर्च के लिए राज्य कोष से पांच वर्ष तक एक-एक हजार रुपये प्रति वर्ष दिये जावें। इसका सारा प्रबन्ध जनता के हाथ में रहे,

(हर्ष ध्वनि) इसके साथ ही राज्य की यह भी इच्छा है कि गांव की सफाई की देख-रेख के लिए यहां म्युनीसिपल कमेटी स्थापित की जावे। शीघ्र ही इसके लिए आवश्यक आज्ञायें जारी होंगी।

म्युनिसिपल कमेटी की स्थापना

जनता को चाहिए कि वे बिना किसी डर व लिहाज से प्राप्त हुये अधिकारों का सद् उपयोग करके सच्चे नागरिक बनने का प्रयत्न करें।

आज कल जग प्रसिद्ध 'रेड-क्रास सोसाइटी' नामक संस्था की उपयोगिता भी बहुत हो रही है अतः उसकी शाखा भी यहां स्थापित की जावे। यह संस्था बीमारों और पीड़ितों को आगे होकर सहायता पहुँचाती है और उनके दुःखों और आवश्यकताओं को दूर करने का पूरा प्रयत्न भी करती है, दैवी दुर्घटनाओं के समय पीड़ितों की सब प्रकार से सहायता कर सान्त्वना देती है, बच्चों और प्रसूता स्त्रियों की तन्दुरुस्ती के लिये उद्योग करती है, जनता को स्वास्थ्य की बातें बतला कर उन पर चलने के लिये उत्साहित करती है, रोग पैदा करने वाले कारणों से जानकार बना कर उनसे बचने के साधन बतलाती है और अस्पतालों को अनेक प्रकार की सहायता करती है। यह संस्था आजकल बहुत ही उपयोगी समझी जाती है, इसका संगठन बहुत ही मजबूत है और देश के सभी नामी व्यक्ति इसके सभासद् हैं और दिन-दिन इसकी उन्नति हो रही है। यह संस्था पोस्टर, छोटी-छोटी

रेड-क्रास सोसाइटी की शाखा सभा स्थापित की जावे।

पुस्तकें, व्याख्यान, मेजिक लेन्टर्न शो, सिनेमा आदि द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करती है। बीमारों के हित के लिये देल्थ विजिटर नियुक्त करती है। चिकित्सक रखती है, दवाइयाँ बांटती है तथा बच्चों एवं माताओं की विशेष सम्हाल करती है, और दैवी-दुखों के समय आवश्यक सामग्रियों के साथ घटनास्थल पर पहुँच कर पीड़ितों की सहायता करने में अग्रसर रहती है। अस्तु ऐसी परोपकारी संस्था की जानकारी रखना और उससे लाभ उठाना यहाँ वालों के लिये बहुत हित कर होगा। श्री महामान्य दरबार साहब की आज्ञा से राज्य की ओर से यहाँ 'रेड क्रास' की शाखा स्थापन के लिए प्रारम्भ में कचहरी के पास का बंगला और दो हजार रुपये आवश्यक सामग्री के लिये दिये जाते हैं। गाँव वालों को चाहिये कि वे इसके सभासद बन कर इसकी व्यवस्था स्वयं निर्धारित नियमों के अनुसार करें। प्रारम्भ में इस वर्ष के लिये श्रीयुत् आसकरणजी छांगाणी ऑनरेरी सेक्रेटरी नियत किये जाते हैं। आशा है, आप लोग सभासद बन कर सहयोग देंगे।

सेवा-समिति को थैली भेंटः—गांव वालों की ओर से

पश्चात् गांव वालों की तरफ से सेवा-समिति के मेम्बरों को २५००) रुपये की एक थैली भेंट करने के लिये चीफ मिनिस्टर साहब को दी गई, जो उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से मेम्बरों का स्वागत करते हुये श्री दरबार की आज्ञा से प्रदान की।

राज्य से स्वर्ण पदक:—

साथ ही राज्य की ओर से प्रत्येक स्वयं-सेवक को स्वर्ण पदक देना जाहिर किया। (हर्ष ध्वनि) श्री महाराजा साहब ने स्वयं खड़े होकर स्वयं-सेवकों के गलों में मेडल (पदक) पहिनाये और प्रमाण-पत्र दिये। इससे जनता में अपार खुशी हुई और चारों ओर से 'जय जयकार' के नारे लगने लगे।

जलसे की यादगार में पंचायत से तीस हजार:—

आज के उत्सव की यादगार में, गांव की सब पंचायत ने मिलकर एक धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय तीस हजार की एकत्रित पूंजी से श्री दरबार के नाम पर स्थापित करने की इच्छा प्रगट की। जो महाराज साहब ने सहर्ष स्वीकार की और राज्य के कोष से भी इस उपयोगी संस्था के लिये पांच हजार की सहायता प्रदान करना जाहिर किया।

सफलता पूर्वक जलसे की समाप्ति:—

पश्चात गाँव वालों ने महाराज साहब के प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करते हुये सदा स्वामीधर्म पालने का आश्वासन दिया। फिर मालायें पहिनाईं गईं और इलायची, सुपारी, पान आदि से सबका सम्मान किया गया। इस प्रकार शाम को यह जलसा आनन्द पूर्वक समाप्त हुआ।

धर्मार्थ-औषधालय की 'मेरे गांव' में स्थापना—

कुछ ही दिनों में मेरे गांव में भी उमेद धर्मार्थ औषधालय की स्थापना हो गई। प्रबन्ध के लिये नगर के ११ सज्जनों की एक कमेटी बना दी गई जिसके संयोजक मिडिल स्कूल के हैड मास्टर पं० हनुमानदासजी बनाये गये। एक अनुभवी विद्वान और उत्साही चिकित्सक भी रख लिया गया जिसकी देख रेख में औषधालय सफलता पूर्वक उन्नति करने लगा। थोड़े ही समय में लोग इस पर श्रद्धा करने लगे और अनेक कठिन रोगियों को आरामी से इसके प्रति विश्वास पैदा हो गया। लोग दूर २ के गांवों से इलाज कराने आने लगे और सब प्रकार की सुविधा पाकर प्रसन्नता प्रकट करने लगे।

ग्राम्य-सेवा-समिति की 'मेरे गांव' में स्थापना—

ग्राम्य-सेवा-समिति भी स्थापित हो गई। समिति का दफ्तर सोमनाथ के मंदिर में रखा गया। अनेक नवयुवक विद्यार्थी उत्साह से भाग लेने लगे। शुरू ही में स्वयं-सेवक काफी संख्या में प्राप्त हो गये और उन्हें आकस्मिक घटना के समय उपचार करने (First Aid) की शिक्षा देने का समुचित प्रबन्ध किया गया। मेलों और उत्सवों में जनता को सुविधा पहुँचाने के लिये समिति के मेम्बरों ने काम भी करना प्रारम्भ कर दिया और आशा होने लगी कि आकस्मिक घटनाओं के समय इनसे सभी श्रेणी के लोगों का हित होगा।

म्युनि० कमेटी की स्थापना और चुनाव—

म्युनिसिपल कमेटी भी राज्य से स्थापित करने की आज्ञा स्टेट गजट में जारी हो गई। चुनाव भी हो गया। गांव वालों ने मेम्वरी के चुनाव में उत्साह से भाग लिया और जो पब्लिक सेवा करने योग्य व्यक्ति थे उन्हीं को वोट देकर जनता ने अपनी कमेटी में प्रतिनिधि चुना। गांव के हाकिम साहब सर्वसम्मति से चेअरमेन चुने गये। कमेटी का काम सुचारू रूप से चलने लगा। और मेम्बरों ने सहयोग के सिद्धान्त पर नगर की सेवा उत्साह पूर्वक निष्पक्ष भाव से प्रारम्भ की। कमेटी ने सफाई के प्रवन्ध के लिये नालियाँ (ड्रेनेज) बनाने की व्यवस्था की। सड़कें पक्की बंधवाई गई। बाज़ार तथा नालियों में रोज झाड़ू निकाले जाने का प्रवन्ध किया गया। टट्टियें रोज साफ़ की जावें इसके लिये भंगियों को नौकर रखा गया और लोग जहाँ तहाँ मल-मूत्र त्याग न करें, उसकी सख्ती से व्यवस्था की गई। रोशनी का प्रबन्ध हुआ। नये मकान स्वास्थ्य को मद्दे नजर रख कर बनाये जावें इसके नियम उपनियम बनाये गये। सराफा चौड़ा किया गया। इस प्रवन्ध से गाँव की सफाई में बड़ा अन्तर पड़ा। इसके प्रति फल में अब यहाँ प्रति वर्ष जो बीमारी का दौरदौरा हो जाया करता था वह बन्द हो गया और मलेरिया की शिकायत भी दूर हो गई। अब जलाशयों का पानी साफ रहता है और मच्छरों की उत्पत्ति बन्द हो गई है इससे जनता का स्वास्थ्य सुधर गया है। अब यहाँ पहिले-से शोक

उन्नत नहीं है और गाँव भी (Healthy) स्वास्थ्यप्रद जगहों में गिना जाने लगा है और जिले भर में 'मेरा गाँव' आदर्श गाँव माना जाता है।

'रेडक्रास' सोसाइटी की शाखा सभा के कार्य—

'रेडक्रास' की शाखा सभा ने भी बहुत उन्नति की। नगर के सभी गरयमान्य सज्जन इसके सभासद बन गये, कई साहूकार तो लाइफ मेम्बर बने, अनेकों ने आर्थिक सहायता प्रदान की। धीरे २ लोग समझने लगे कि इसके सभासद बनने से वे एक प्रकार से दुःखियों के सहायक बनते हैं। अतः मनुष्यत्व के नाते सभी श्रेणी के लोगों ने सहयोग दे कर, इसे उन्नत बनाने में पूरा उद्योग किया। संस्था ने प्रति सप्ताह भिन्न २ मोहल्लों में 'मैजिक लेनटर्न शो' बतलाने का प्रबन्ध किया जिससे जनता अस्वास्थ्यकर बातों से जानकार बन कर उनसे बचने के लिये सतर्क रहे। मक्खियों की उत्पत्ति तथा उनसे होने वाली हानियाँ, मलेरिया की उत्पत्ति और बचने के उपाय, विशूचिका का कारण और उसका प्रतिकार तथा क्षय और उससे बचाव आदि अनेक उपयोगी बातें बतलाई जाने लगीं और उनकी व्याख्या तथा विवरण भी सब को समझाया जाता जिससे साधारण पढ़े लिखे लोग भी लाभ उठाने लगे। स्त्रियां तो एक प्रकार का तमाशा देख कर बहुत प्रसन्न होतीं और अनेक काम की बातें जान कर आश्चर्य-सा प्रगट करतीं। इसके साथ ही प्रति मास की पहिली तारीख को विद्यार्थी, स्काउट्स

तथा सेवा-समिति के सभासदगण बड़े २ पोस्टर्स जिनमें तसवीरों द्वारा रोगों की उत्पत्ति के कारण तथा बचने के उपाय छपे हुये थे शहर में लेकर घूमते, जिससे लोगों का ध्यान उस ओर स्वयं आकर्षित होता और स्वास्थ्य सम्बन्धी बातों के प्रति उनकी स्मृति ताजी रहती । मच्छरों की उत्पत्ति किस प्रकार होती है, वे छोटे से बड़े कैसे होते हैं और वे मनुष्यों को किस प्रकार से हानि पहुँचाते हैं, यह भी समय २ पर लोगों को प्रत्यक्ष बतलाया जाने लगा। सरकारी अस्पताल तथा उम्मेद धर्मार्थ औषधालय में रोगियों को रहने के लिये आवश्यक सामग्री आदि से सहायता की जाने लगी। गरीब बीमारों के खुराक की व्यवस्था की गई। एक हेल्थ विजीटर रखी गई जो घर २ जाकर बच्चों के पालने की मुख्य बातें तथा गर्भवती स्त्रियों के रहन-सहन सम्बन्धी सलाह देती थी। देशी दाइयों को अपने धन्धे में जानकार बनाने तथा सफाई रखने का ज्ञान बतलाने के लिये शिक्षा देने का प्रबन्ध भी किया गया। आकस्मिक घटनाओं के समय तुरन्त सहायता पहुँचाने के लिये मुख्य २ स्थानों पर 'फर्स्ट एड' की आवश्यक वस्तुओं की पेटियाँ रखी गईं। इस तरह पहिले ही वर्ष में 'रेडक्रास' की शाखा सभा ने जनता के हित के लिये जो उद्योग किया वह सभी लोगों को पसन्द आया और लाभदायक भी प्रमाणित हुआ।

दूसरे गांव वाले भी लाभ उठाने को उत्सुक—

अन्य गांव वाले यहां की सुधरी अवस्था को देख कर प्रसन्न होते हैं और इनके उदाहरण से लाभ उठाने के लिये प्रयत्नशील हो रहे हैं, जो इस देश वासियों के लिये एक शुभ लक्षण समझा जाना चाहिये।

वर्षों बाद फिर सफ़ाई में ढिलाई—

कई वर्षों तक मेरे गांव की सफाई का काम यथाविधि नियमित रूप से होता रहा। म्युनिसिपल कमेटी भी सतर्क रही। जनता भी सदा सहयोग व सहानुभूति बतलाती रही जिससे वहाँ कोई संक्रामक बीमारी नहीं फैली। लोगों का स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहा। गाँव की खराब आबहवा सम्बन्धी पुरानी शिकायतें भूल से गये और बीमारियों की कमी से लोगों का ध्यान सफाई की ओर से कुछ कुछ हटने भी लगा, लापरवाही भी होने लगी। इस सम्बन्धी खर्च भी घटाया जाने लगा जिससे सेनीटेशन में बिगाड़ होने लगा। इधर अनेक कार्यकर्त्ता दूसरी प्रवृत्तियों में महत्वाकाँक्षा को लेकर फँस जाने से इधर से उदासीन रहने लगे जिससे न तो उत्साह से आर्थिक सहायता ही कहीं से मिलती थी और न कार्यकर्त्ताओं का दिल ही बढ़ाया जाता था, इससे कुछ वर्षों के बाद सफाई का काम बहुत कुछ ढीला हो गया। क़ानून की सख्ती घट जाने से और देख-रेख की कमी से लोग फिर पहिले की तरह जहाँ तहाँ कूड़ा करकट जमा करने लग गये। अनेक स्थानों

गई और महीनों पड़ती रहीं जिससे मच्छरों की वृद्धि बहुत बढ़ गई, पर, लोग इसके परिणाम से एक प्रकार से अचेत ही रहे। इधर भाद्रपद मास से ही मलेरिया का प्रकोप भी जारी हो गया। लोग घर २ में बीमार पड़ने लगे। सरकारी दवाखाने में बीमारों की भीड़ लगने लगी। गाँव के वैद्य व पसारी नुसखा लिखते व दौंते २ तंग आ गये। बीमारी बढ़ती ही गई और शायद ही कोई घर बचा हो जहाँ २–३ व्यक्ति एक साथ बीमार न हुये हों, लोग भय खाने लगे, अखबारों में यहाँ की भीषण खबरें छपने लगी। लोग गाँव छोड़ कर बाहर जाने लगे। कई जोधपुर चले गये, कुछ ब्यावर भी आ गये। कुछ ही दिनों में मेरे गांव के लोग ज्वर से भुगते हुये कमजोर और निस्तेज चेहरे वाले दीखने लगे। बीमारी दीवाली तक बराबर बनी रही जिससे गांव वालों को बहुत कष्ट पहुँचा। मलेरिया से कमजोर हुये कुछ व्यक्ति कई दूसरी बीमारियों में फंस गये और शीत काल की सर्दी न सह सकने से कुछ तो काल के वशीभूत बन गये।

सतत् उद्योग व उत्साह न रखने का फल—

सफाई में लोगों को लगातार उत्साहित बनाये रखने के लिये हमेशा प्रोपेगेन्डा की जरूरत रहती है, पर, मेरे गांव में इस सम्बन्ध में दुर्लक्ष्य रखने से सुधरी हुई आबहवा भी फिर से बिगड़ गई और लोगों को नाहक कष्ट उठाना पड़ा। यदि मलेरिया सम्बन्धी आवश्यक बातें समझाने का काम लगातार जारी रहता तो आज

पर खड्डे हो गये जो वर्षाकाल में भरे सड़ने लगे। लोग शहर के बाहर पास, ही टट्टी चले जाने लगे। जिससे गाँव में, गलियों में वही पुराना घृणित दृश्य फिर से दीखने लगा और पानी के बहाव की व्यवस्था बिगड़ जाने से सदा कीचड़ रहने लगा। ऐसी अवस्था हो जाने पर भी लोगों का ध्यान इसलिये आकर्षित नहीं हुआ कि गाँव में कोई बीमारी नहीं थी। शिथिलता के कारण अनेक कार्यकर्त्ता उदासीन हो गये, कुछ लोगों के आपस में ईर्षा पैदा होगई, कई धनोपार्जन के लिये विदेश चले गये। कुछ स्थायी लोगों ने वैष्णवों का पुराना मनोमालिन्य ताजा करने का प्रयत्न किया, जिससे संगठित रूप से सार्वजनिक कार्य चालू नहीं हो सका, न सफाई में कुछ सुधार ही हो सका। यद्यपि म्युनिसिपल कमेटी अपनी ड्यूटी बजाती रही, पर, उसके पास भी पर्याप्त साधन तथा द्रव्य न होने से वह भी आवश्यकतानुसार सफाई कराने में असमर्थ रही और न जनता पर सख्ती ही कर सकी। लोगों का सहयोग भी घट गया और वे उल्टे अनुचित टिप्पणियों द्वारा बाधा पहुँचाने लगे जिससे मेरे गाँव की अवस्था फिर से सं० १९७४ के पहिले जैसी हो गई।

फिर मलेरिया का दौरा—

सं० १९९३ में अनेक जगहों पर मारवाड़ में पानी की कमी रही पर भगवान की कृपा से मेरे गाँव में वार्षिक एवरेज से भी ढाई गुना पानी ज्यादा हो गया। गाँव के सभी तालाब तथा नदियां भर

गईं और महीनों बहती रहीं जिससे मच्छरों की वृद्धि बहुत बढ़ गई, पर, लोग उसके परिणाम से एक प्रकार से अचेत ही रहे। इधर भाद्रपद मास से ही मलेरिया का प्रकोप भी जारी हो गया। लोग घर २ में बीमार पड़ने लगे। सरकारी सफाखाने में बीमारों की भीड़ लगने लगी। गाँव के वैद्य व पसारी नुसखा लिखते व बाँधते २. तंग आ गये। बीमारी बढ़ती ही गई और शायद ही कोई घर बचा हो जहाँ २–३ व्यक्ति एक साथ बीमार न हुवे हों, लोग भय खाने लगे, अखबारों में यहाँ की भीषण खबरें छपने लगीं। लोग गाँव छोड़ कर बाहर जाने लगे। कई जोधपुर चले गये, कुछ ब्यावर भी आ गये। कुछ ही दिनों में मेरे गांव के लोग ज्वर से भुगते हुये कमजोर और निस्तेज चेहरे वाले दीखने लगे। बीमारी दीवाली तक बराबर बनी रही जिससे गांव वालों को बहुत कष्ट पहुँचा। मलेरिया से कमजोर हुये कुछ व्यक्ति कई दूसरी बीमारियों में फंस गये और शीत काल की सर्दी न सह सकने से कुछ तो काल के वशीभूत बन गये।

सतत् उद्योग व उत्साह न रखने का फल—

सफाई में लोगों को लगातार उत्साहित बनाये रखने के लिये हमेशा प्रोपेगेन्डा की जरूरत रहती है, पर, मेरे गांव में इस सम्बन्ध में दुर्लक्ष्य रखने से सुधरी हुई आबहवा भी फिर से बिगड़ गई और लोगों को नाहक कष्ट उठाना पड़ा। यदि मलेरिया सम्बन्धी आवश्यक बातें समझाने का काम लगातार जारी रहता तो आज

गाँव की ऐसी अवस्था उपस्थित नहीं होती और पहिले का किया हुआ परिश्रम और द्रव्य वृथा नहीं जाता। फिर भी इसे संतोष कीवात कहे कि वीमारों के इलाज का प्रवन्ध, सरकार की ओर से अच्छा रहा और शफाखाना के डाक्टर श्रीयुत् ज्योतिस्वरूपजी भी वड़े योग्य और लग्न से इलाज करने वाले व्यक्ति थे। इससे लोगों को वड़ा ढाढस रहा।

भविष्य में सावधानी रखी जावे—

मलेरिया के पिछले आक्रमण से यह भली भांति सिद्ध हो गया कि सफाई की थोड़ी-सी ढिलाई भी बहुत हानि पहुँचा सकती है, इस पर यह गाँव कुछ ऐसी हालत में बसा हुआ है कि यहाँ अन्य गावों की अपेक्षा, बीमारी का जोर जल्दी हो जाता है और वह रहता भी अधिक है। अतः भविष्य में ऐसी आपदाओं से बचने के लिये सफाई के सम्वन्ध में कमेटी को ज्यादा अधिकार दिये जावें और स्वास्थ्य की बातों से लोगों को ज्यादा जानकार बनाये रखने के लिये मलेरिया नाशक प्रोपेगेन्डा जारी रखा जावे।